राष्ट्रीय दैनिक

बुद्ध का संदेश

हिन्दी समाचार पत्र

लखनऊ,कानपुर,कन्नौज,बरेली,सीतापुर,सोनभद्र,गोण्डा,बाराबंकी,बलरामपुर,श्रावस्ती,बहराइच,अम्बेडकरनगर,फैजाबाद, बस्ती, संतकबीरनगर,गोरखपुर,कुशीनगर,देवरिया,महराजगंज,सिद्धार्थनगर में एक साथ प्रसारित।

एक्शन फिल्म में काम करेंगे...8

दैनिक बुद्ध का संदेश | 9795951917,9415163471 | @budhakasandesh | budhakasandeshnews@gmail.com | www.budhakasandesh.com

शुक्रवार, 11 नवंबर 2022 सिद्धार्थनगर संस्करण | www.budhakasandesh.com | वर्ष: 09 अंक: 321 पृष्ठ 8 आमंत्रण मूल्य 2/–रूपया

लखनऊ सुचीबद्ध कोड– SDR-DLY-6849, डी.ए.वी.पी.कोड–133569 | सम्पादक : राजेश शर्मा | उत्तर प्रदेश सरकार एवं भारत सरकार (DAVP) से सरकारी विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

पहले पहाड़ पर चूना लगा दिया जाता था, जो बारिश आने पर धुल जाता: जेपी नड्डा

बिलासपुर। घुमारवीं में एक जनसभा में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कहा कि पहले चुनाव आता था, तो चिल्लाने लगते थे कि सड़क बनेगी, सड़क बनेगी। उसके बाद पहाड़ पर चूना लगा दिया जाता था और गांववाले खुश हो जाते थे। जब बारिश आती थी, चूना धुल जाता था और 5 साल के लिए आपको चूना लग जाता था। जेपी नड्डा ने कहा कि कभी सोचा था कि बिलासपुर में एम्स होगा? कभी सोचा था देश का एक हाइड्रो इंजीनियरिंग कॉलेज अकेला बिलासपुर में होगा? कभी सोचा था फोर–लेन बनेगा और आप 35 मिनट में किरतपुर पहुंचेंगे? ये विकास डबल इंजन सरकार ने किया, क्योंकि ये बदलता भारत है। जेपी नड्डा ने कहा कि देश में ट्यूबरक्लोसिस की दवा पहुंचने में 25 साल लग गए। देश में टिटनेस की दवा पहुंचने में 30 साल लग गए। पोलियो की दवा

पहुंचने में 28 साल लगे। जापानी बुखार की दवा पहुंचने में 100 साल लगे। आज मोदी जी के नेतृत्व में सिर्फ 9 महीने के अंदर कोरोना की दो–दो वैक्सीन भारत ने बनाई। गलत बटन दबने का मतलब होता है, बिलासपुर में एम्स का न आना। हाइड्रो इंजीनियरिंग कॉलेज मिलने के बावजूद भी खुलने न देना। गलत बटन दबने का मतलब होता है अटल टनल का न बन पाना। इसलिए कहते हैं सही बटन दबता है तो विकास होता है और गलत बटन दबने से विकास रूक जाता है। नड्डा ने कहा कि कभी सोचा था कि बिलासपुर में एम्स होगा? कभी सोचा था देश का एक हाइड्रो इंजीनियरिंग कॉलेज बिलासपुर में होगा? कभी सोचा था फोर–लेन बनेगा और आप 35 मिनट में किरतपुर पहुंचेंगे? ये विकास डबल इंजन सरकार ने किया, क्योंकि ये बदलता भारत है। पहले चुनाव आता था, तो चिल्लाने लगते थे कि सड़क बनेगी, सड़क बनेगी। फिर पहाड़ पर चूना लगा दिया जाता था और बारिश आती थी, चूना धुल जाता था। और पांच साल के लिए आपको चूना लग जाता था।

हिमाचल में प्रियंका गांधी बोलीं: नौजवानों को देंगे 1 लाख रोजगार, पुरानी पेंशन योजना पर भी होगा फैसला

शिमला। कांग्रेस के महासचिव प्रियंका गांधी लगातार हिमाचल प्रदेश में चुनाव प्रचार कर रही हैं। हिमाचल प्रदेश में वह युवाओं को साधने की कोशिश कर रही हैं। आज उन्होंने एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए साफ तौर पर कहा कि अगर कांग्रेस की सरकार बनती है तो पहले ही कैबिनेट की बैठक में एक लाख से रोजगार दिए जाने पर फैसला होगा। इसके साथ ही उन्होंने पुरानी पेंशन योजना पर भी फैसला लेने की बात कही है। अपने संबोधन में प्रियंका गांधी ने कहा कि कांग्रेस ये बात कह रही है कि जिस दिन नई सरकार के

मंत्रिमंडल की बैठक होगी उसी दिन यह फैसला होगा कि आपको(नौजवान) 1 लाख रोजगार दिए जाएंगे। ये आपका हक है। सिरमौर में एक जनसभा में कांग्रेस नेता ने कहा कि पहली मंत्रिमंडल की बैठक में पुरानी पेंशन योजना पर भी फैसला होगा। कांग्रेस पार्टी आपके लिए काम करना चाहती है। हमने निर्णय लिया है कि हर विधानसभा में 4 अंग्रेजी माध्यम स्कूल बनाएंगे ताकि आपके प्रदेश में शिक्षा को नई शक्ति मिले। उन्होंने कहा कि भाजपा के बड़े–बड़े नेता कहते हैं कि हमारी अर्थव्यवस्था में पुरानी पेंशन स्कीम के लिए पैसा ही नहीं है। लेकिन देखिए, छत्तीसगढ़ व राजस्थान में आज पुरानी पेंशन स्कीम लागू है। उन्होंने कहा कि इस प्रदेश को जब बनाया गया तब सभी ने इंदिरा गांधी जी से कहा था कि यह प्रदेश चल नहीं पाएगा। लेकिन इंदिरा जी ने आपके भरोसे पर यह प्रदेश बनाया। यहां के बुजुर्गों, कर्मचारियों और नौजवानों ने यह प्रदेश बनाया। प्रियंका ने कहा कि कुछ दिनों पहले ठश्रच के बड़े नेताओं ने हिमाचल प्रदेश में आकर कहा कि – कांग्रेस आपको स्थिर सरकार दे ही नहीं सकती। लेकिन आप खुद बताइए कि आजादी से लेकर अब तक सबसे स्थिर सरकारें किसकी रही हैं और कौन देश में अस्थिरता फैला रहा है! उन्होंने कहा कि आज जब आप ज्ट और अखबारों में विज्ञापन देखते हैं तो आपको लगता है कि बहुत काम हो गया, लेकिन सच्चाई इससे बहुत अलग होती है। इसलिए मैं आप सभी से निवेदन करती हूं कि आप अपने अनुभव और परिस्थितियों के आधार पर अपना वोट दें।

अखिलेश ने डिंपल को सौंपी मुलायम की विरासत

मैनपुरी उपचुनाव में होंगी सपा की प्रत्याशी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश से बड़े चुनावी घटनाक्रम में डिंपल यादव को मैनपुरी लोकसभा सीट से समाजवादी पार्टी (सपा) के उम्मीदवार के रूप में उम्मीदवार बनाया गया है। एक आधिकारिक घोषणा करते हुए, पार्टी ने एक अधिसूचना में कहा कि अखिलेश यादव की पत्नी और मुलायम यादव की बहू इस सीट से चुनाव लड़ेंगी जो सपा सुप्रीमो के निधन के बाद खाली हो गई थी। मैनपुरी सपा का गढ़ है और डिंपल के इस सीट से चुनाव लड़ने से संदेश स्पष्ट है कि मुलायम का निर्वाचन क्षेत्र पार्टी के सबसे महत्वपूर्ण एजेंडे में से एक है। चुनाव आयोग ने पिछले

हफ्ते घोषणा की थी कि समाजवादी पार्टी के संरक्षक दिवंगत मुलायम सिंह के मैनपुरी लोकसभा क्षेत्र के लिए उपचुनाव 5 दिसंबर को होंगे। उत्तर प्रदेश की संसदीय सीट पूर्व मुख्यमंत्री के 10 अक्टूबर को निधन के बाद से खाली पड़ी है। चुनाव आयोग द्वारा शनिवार को घोषित कार्यक्रम के अनुसार चुनाव अधिसूचना 10 नवंबर को जारी की जाएगी, नामांकन दाखिल करने की आखिरी तारीख 17 नवंबर और 21 नवंबर उम्मीदवारी वापस लेने की आखिरी तारीख होगी. अधिकारियों ने बताया कि मतदान पांच दिसंबर को होगा और मतों की गिनती आठ दिसंबर को होगी।

प्रवर्तन निदेशालय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह का एक ''राजनीतिक हथियार'': जयराम रमेश

नई दिल्ली। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता जयराम रमेश ने बृहस्पतिवार को दावा किया कि शिवसेना सांसद संजय राउत की जमानत संबंधी आदेश से संकेत मिलता है कि प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह का एक ''राजनीतिक हथियार'' है।

मुंबई की एक विशेष अदालत ने बुधवार को कथित धनशोधन मामले में राउत की गिरफ्तारी को अवैध और निशाना बनाने' की कार्रवाई करार दिया तथा उन्हें जमानत प्रदान कर दी थी। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता राहुल गांधी के नेतृत्व में पार्टी की 'भारत जोड़ो यात्रा' के दौरान यहां संवाददाता सम्मेलन में रमेश ने कहा कि विशेष अदालत ने तीखी

टिप्पणी की है और इस्तेमाल की गई से स्पष्ट है कि केंद्रीय जांच एजेंसी का इस्तेमाल ''राजनीतिक विरोधियों को डराने और धमकाने के लिए'' किया जा रहा है। रमेश ने दावा किया, ''राउत के जमानत आदेश से पता चलता है कि प्रवर्तन निदेशालय एक स्वतंत्र संस्था नहीं है, बल्कि मोदी और शाह के हाथ में एक राजनीतिक हथियार है।'' उन्होंने कहा कि राउत को गिरफ्तार करने का कोई औचित्य ही नहीं था। राउत, उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाले शिवसेना गुट के मुखपत्र 'सामना' के कार्यकारी संपादक भी हैं। रमेश ने कहा, ''हमें उम्मीद है कि संजय राउत अलग–अलग मुद्दों पर केंद्र सरकार पर निशाना साधते रहेंगे।'' पूर्व केंद्रीय मंत्री ने यह भी आरोप लगाया कि भाजपा सहकारी क्षेत्र को नष्ट करने की कोशिश कर रही है। उन्होंने दावा किया, ''सहकारिता क्षेत्र को केंद्रीय गृह मंत्री के हाथों में केंद्रीकृत किया जा रहा है।'' उन्होंने कहा कि यह कांग्रेस और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) को ठेस पहुंचाने के लिए किया जा रहा है, जो इस क्षेत्र में मजबूत हैं। उन्होंने कहा, ''संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (संप्रग) शासन के दौरान, सहकारी क्षेत्र पर कोई कर नहीं था, जो मोदी सरकार के सत्ता में आने के बाद बदल गया।'' कांग्रेस के जनसंपर्क कार्यक्रम के बारे में जानकारी देते हुए रमेश ने कहा कि पार्टी की ओडिशा इकाई ने 31 अक्टूबर से 2,200 किलोमीटर की 'भारत जोड़ो यात्रा' शुरू कर दी है। इसी महीने असम और त्रिपुरा में इसी तरह की पहल शुरू की जाएगी, जबकि पश्चिम बंगाल इकाई दिसंबर में यात्रा शुरू करेगी। यह पूछे जाने पर कि 'भारत जोड़ो यात्रा 'गुजरात से क्यों नहीं गुजर रही है, जहां एक और पांच दिसंबर को विधानसभा चुनाव होने हैं, उन्होंने कहा कि राज्य इस मार्च के लिए चुने गए मार्ग पर नहीं है।

राहुल का केंद्र पर तंज, संसद में चीन और महंगाई पर जैसे ही बोलो, Mic off

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता राहुल गांधी के भारत जोड़ो यात्रा का पड़ाव अब महाराष्ट्र में है। जहां एक जनसभा को संबोधित करते हुए राहुल ने आरोप लगाया है कि उन्हें संसद में बोलने नहीं दिया जाता है। जैसे ही वे जनता से जुड़े मुद्दे उठाते हैं, उनका माइक बंद कर दिया जाता है। उन्होंने कहा कि इसलिए जनता को देश की हालत बताने के लिए भारत जोड़ो यात्रा कांग्रेस की तरफ से शुरू की गई। राहुल गांधी ने अपना वीडियो ट्विट किया है, जिसमें वो कहते नजर आ रहे हैं कि पार्लियामेंट में जैसे ही जनता से जुड़े मुद्दे उठाते हैं तो उनका माइक ऑफ कर दिया जाता है। राहुल गांधी ने ट्वीट करते हुए कहा कि चीन– माइक ऑफ, महंगाई – माइक ऑफ, नोटबन्दी – माइक ऑफ, अग्निपथ – माइक ऑफ, बेरोजगारी – माइक ऑफ।

देश को सुरक्षा खतरों के नए आयामों से निपटने के लिए तैयार रहने की जरूरत: राजनाथ सिंह

नई दिल्ली। राष्ट्रीय रक्षा कॉलेज के दीक्षांत समारोह में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, दिल्ली ने कहा कि जब किसी भी क्षेत्र की शांति और सुरक्षा को खतरा होता है तो उससे पूरी दुनिया कई तरह से प्रभावित होती है। यूक्रेन–रूस संघर्ष के कारण विभिन्न अफ्रीकी और एशियाई देशों में खाद्य संकट पैदा हो गया। जनजातीय प्रणाली की शुरुआत से राष्ट्र के विकास तक, सुरक्षा के प्रतिमान में बदलाव हुए हैं मगर सुरक्षा की व्यापक अवधारणा अभी भी वही है, जो मानव स्वतंत्रता, मानव अधिकार और मानव गरिमा की रक्षा करता।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने सुझाव दिया कि देश को सुरक्षा खतरों के नए आयामों से निपटने के लिए तैयार रहने की जरूरत है जो ष्साइबर और सूचना युद्धष जैसे गैर–गतिज और गैर–संपर्क युद्ध की श्रेणी में आते हैं। नेशनल डिफेंस कॉलेज में दीक्षांत समारोह में बोलते हुए, सिंरक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने सुझाव दिया कि देश को सुरक्षा खतरों के नए आयामों से निपटने के लिए तैयार रहने की जरूरत है जो ष्साइबर और सूचना युद्धष जैसे गैर–गतिज और गैर–संपर्क युद्ध की श्रेणी में आते हैं। नेशनल डिफेंस कॉलेज में दीक्षांत समारोह में बोलते हुए, सिंह ने कहा, ष्बदलते समय और समाज के साथ, सुरक्षा के आयाम भी बदल गए हैं। सुरक्षा को आम तौर पर दो पहलुओं में देखा जाता था– पहला, आंतरिक सुरक्षा और दूसरा, बाहरी सुरक्षा।

ज्ञानवापी में मिले शिवलिंग के संरक्षण पर 11 नवंबर को 3 बजे सुप्रीम सुनवाई, पीठ का गठन करेगी शीर्ष अदालत

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को ज्ञानवापी मस्जिद मामले की सुनवाई के लिए कल एक पीठ गठित करने का फैसला किया। शीर्ष अदालत ने मई में वाराणसी के जिला मजिस्ट्रेट को उस क्षेत्र को सुरक्षित करने के लिए कहा था जहां मस्जिद क्षेत्र के वीडियोग्राफिक सर्वेक्षण के दौरान दावा किया गया था कि मुसलमानों के मस्जिद में नमाज अदा करने के अधिकारों को बाधित या प्रतिबंधित किए बिना शिवलिंग पाया गया था। सुप्रीम कोर्ट कल दोपहर 3 बजे ज्ञानवापी मामले की सुनवाई के लिए राजी

हो गया है। हिंदू पक्ष की ओर से अधिवक्ता विष्णु शंकर जैन ने सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़ के समक्ष मामले को तत्काल सूचीबद्ध करने का उल्लेख किया। कल दोपहर 3 बजे ज्ञानवापी स्थितियों के लिए राजी हो गया। न्यायमूर्ति डी वाई चंद्रचूड़ और न्यायमूर्ति पी एस नरसिम्हा की पीठ ने अंजुमन इंतेजामिया मस्जिद, वाराणसी की प्रबंधन समिति की अपील पर सुनवाई करते हुए कहा कि इस बात पर स्पष्टता का अभाव है कि क्या निचली अदालत ने अपने 16 मई के आदेश में केवल सुरक्षा का निर्देश दिया था। – 20 मुसलमानों की संख्या को सीमित करने के लिए जो मस्जिद में प्रवेश कर सकते हैं और नमाज अदा कर सकते हैं, और वजू खाने के उपयोग को रोकने के लिए अन्य राहतें भी मांगी गई थीं।

ममता ने अधिकारियों से कहा, बंगाल में दिसंबर में दंगे भड़काने की रची जा रही साजिश, रखें निगाह

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने बड़ा दावा किया है। ममता बनर्जी ने अधिकारियों से कहा है कि कुछ लोगों की बंगाल में दिसंबर में सांप्रदायिक दंगे भड़काने की साजिश है। इस पर निगाह रखें। इसके साथ ही ममता बनर्जी ने यह भी दावा किया कि उत्तर बंगाल को अलग करने के लिए सीमा पार से आग्नेयास्त्रों की तस्करी की जा रही है। इससे पहले भी उत्तर बंगाल को अलग करने के लिए ममता बनर्जी ने भाजपा पर बड़े आरोप लगाए थे। उन्होंने साफ तौर पर कहा था कि बंगाल को

विभाजन करने की साजिश चल रही है। इसके साथ ही उन्होंने कहा था कि वह किसी कीमत पर बंगाल का विभाजन नहीं होने देंगे। बनर्जी ने कहा था कि भाजपा राज्य के उत्तरी हिस्सों में राजबंशी और गोरखाओं को भड़काकर पश्चिम बंगाल में अलगाववाद को बढ़ावा दे रही है। हम पश्चिम बंगाल का विभाजन कभी नहीं होने देंगे।

उन्होंने कहा था कि 2019 में, देश की राजनीतिक स्थिति अलग थी, भाजपा बिहार, झारखंड और कई अन्य राज्यों में सत्ता में थी। लेकिन अब, देशभर में इसकी राजनीतिक मौजूदगी कम हो गई है, यह अब कई राज्यों में सत्ता में नहीं है। उन्होंने दावा किया कि भाजपा 2024 के लोकसभा चुनावों के बाद सत्ता में नहीं लौटेगी। उन्होंने यह भी कहा था कि जब भी कोई चुनाव आता है, भाजपा सीएए और एनआरसी को लागू करने की बात करती है।

रामभक्तों की सुविधा के लिए बढ़ाई गयी दर्शन अवधि

–शाम 7 बजे तक भक्त कर सकेंगे रामलला का दर्शन

अयोध्या । रामनगरी अयोध्या में रामलला के भव्य मंदिर निर्माण के कारण राम भक्तों के आने की संख्या दिनों दिन बढ़ती ही जा रही है. प्रतिदिन लाखों की संख्या में श्रद्धालु राम नगरी पहुंचते हैं और अपने आराध्य के मंदिर के निर्माण से रूबरू होते हैं वहीं, श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की ओर से हर दिन ये प्रयास किया जाता है कि रामनगरी आने वाला हर भक्त प्रभु श्रीराम का दर्शन कर सकें। इस बार ट्रस्ट की ओर से रामलला के दर्शन मार्ग पर ही राम झरोखे का निर्माण कराया गया है, जहां से लोग राम मंदिर निर्माण आसानी से देख पाते हैं. इसके साथ ही ट्रस्ट ने रामनगरी आने वाले भक्तों के लिए एक और सौगात दी है। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय के मुताबिक, रामलला के दर्शन अवधि में डेढ़ घंटे की बढ़ोतरी की गई है. इसके साथ ही रामलला की तीन प्रमुख आरती में श्रद्धालुओं को शामिल किए जाने की भी योजना है। राय का कहना है कि जागरण आरती सुबह 6:30 बजे की जाएगी जिसमें 30 राम भक्त शामिल हो सकेंगे. इसके अलावा दर्शन सुबह 7 बजे से प्रथम पाली में राम भक्तों के लिए खोला जाएगा जिसमें प्रथम पाली में आधे घंटे की बढ़ोतरी की गई है. अब रामलला के दर्शन सुबह 11 बजे की बजाए 11:30 बजे तक कर सकेंगे. इसी तरह दूसरी पाली में 1 घंटे की दर्शन अवधि बढ़ाई गई है. दोपहर 2 बजे भगवान रामलला का मंदिर राम भक्तों के लिए खुलेगा. राम भक्त शाम 7 बजे तक रामलला का दर्शन कर सकेंगे। श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के कैंप कार्यालय प्रभारी प्रकाश गुप्ता ने बताया कि पिछले कुछ सालों से अयोध्या में बड़ी संख्या में राम भक्त पहुंच रहे हैं. भीड़ बढ़ने के कारण काफी संख्या में राम भक्त रामलला के दर्शन से वंचित हो जा रहे थे. ऐसे में श्रीराम जन्म भूमि ट्रस्ट ने तय किया कि रामलला के दर्शन अवधि का समय बढ़ाया जाए. श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के कैंप कार्यालय पर पूर्व में रजिस्ट्रेशन कराना होगा और सभी सुरक्षा मानकों को पूरा करते शामिल होना होगा. रजिस्ट्रेशन के बाद सुबह की जागरण आरती में 30 श्रद्धालु और दोपहर की भोग आरती में 30 श्रद्धालु शामिल हो सकेंगे. वहीं, शाम 7:30 बजे की भोग आरती में 60 राम भक्त शामिल हो सकेंगे. इस तरह राम लला की आरती में पूरे दिन में 120 लोग अलग–अलग समय पर शामिल किए जाएंगे।

एसडीएम की अगुवाई में निकाली गई मतदाता जागरूकता रैली

निष्पक्ष मतदान करने के लिए लोगों से की गई अपील

मिल्कीपुर–अयोध्या । जिला निर्वाचन अधिकारी के निर्देशानुसार .मिल्कीपुर तहसील क्षेत्र अंतर्गत नवसृजित नगर पंचायत कुमारगंज स्थित राम नेवाज सिंह पीजी कॉलेज के छात्र–छात्राओं ने मतदाता जागरूकता रैली निकालकर नगर पंचायत के मतदाताओं को अधिक से अधिक मतदान करने की अपील की । छात्र छात्राओं के साथ मतदाता जागरूकता रैली में उप जिलाधिकारी मिल्कीपुर अमित जयसवाल भी मौजूद रहे जागरूकता रैली खंडासा मोड़ कस्बा कुमारगंज तक निकाली गई, एसडीएम ने मतदाताओं को नगर निकाय चुनाव में मतदान में बढ़–चढ़कर प्रतिभाग करने की अपील की, तथा मतदान करने के प्रति छात्र छात्राओं समेत महाविद्यालय के अध्यापकों व अन्य कर्मचारियों को शपथ भी दिलाई। मतदाताओं को भारत के संघीय ढांचे के बारे में विस्तार से बताते हुए विधानसभा निर्वाचन के बारे में एसडीएम द्वारा समझाया गया तथा मतदाता सूची कौन तैयार करता है, उसमें संशोधन के लिए कौन से प्रपत्र प्रयोग होते हैं, मतदाता सूची से नाम विलोपन के लिए कौन सा प्रपत्र प्रयोग करते हैं सहित तमाम जानकारियां भी साझा की गई। एसडीएम अमित कुमार जायसवाल ने जानकारी देते हुए बताया कि आगामी 1 जनवरी 2023 तक जो भी व्यक्ति 18 वर्ष की आयु पूर्ण कर रहा हो वह फॉर्म 6 भर कर मतदाता सूची में अपना नाम सम्मिलित करवा सकता है। इतना ही नहीं उन्होंने यह भी कहा कि निष्पक्ष होकर पूरे देश के साथ भारत के सभी निर्वाचन में बढ़ चढ़कर आप लोग हिस्सा लेंगे। इस मौके पर महाविद्यालय के संरक्षक रामदेव सिंह एवं महाविद्यालय शिक्षक देवेश चंद्र पांडे अरविंद सिंह अनिल कुमार सिंह दिलीप तथा लेखपाल विंध्या प्रसाद तिवारी, महेंद्र तिवारी, विश्वनाथ प्रताप, विजेंद्र मिश्रा समेत महाविद्यालय के छात्र छात्राएं उपस्थित रहे। इसी क्रम में उप जिला अधिकारी नगर पंचायत के मतदान केंद्र प्राथमिक विद्यालय बवां द्वितीय निरीक्षण किया निरीक्षण के दौरान संबंधित कर्मियों को आवश्यक दिशा निर्देश भी दिया।

मांगों को लेकर भाकियू ने तहसीलदार को सौंपा ज्ञापन

सोहावल–अयोध्या । भारतीय किसान यूनियन अराजनैतिक की मासिक पंचायत 16 बिंदुओं को लेकर तहसील अध्यक्ष श्री नाथ वर्मा की अध्यक्षता में की गयी स जिस का संचालन वरिष्ठ प्रदेश सचिव फरीद अहमद ने किया और कहा कि सोहावल तहसील क्षेत्र अंतर्गत भाईपुर खिरौनी गयागंज समितियों पर डीएपी खाद ना मिलने से किसानों की बुवाई में परेशानी हो रही है , धान क्रय केंद्रों पर निर्धारित रेट लिस्ट लगवाकर किसानों की तौल करायी जाय स बिचौलियों द्वारा सेंटर पर मिलीभगत पर रोक लगाई जाय , सोहावल मसौधा मार्ग से सटा मसौधा चीनी मिल द्वारा सड़क किनारे बने खुले गंदे नाले से आसपास बढ़ रहा डेंगू और मलेरिया का प्रकोप खुले नाले पर ढक्कन लगवाया जाय और आसपास दवा का छिड़काव कराया जाय, पात्र व्यक्तियों का राशन कार्ड नहीं बन पा रहा है और ना ही नाम बढ़ोतरी हो रही है पात्र व्यक्तियों का कार्ड बनवाया जाय , सरयू नदी ढेमवा शमशान घाट मार्ग कटान में कट जाने के कारण पुनः निर्माण कराया जाय, जिससे क्षेत्रवासियों को सुविधा मिल सके, आंगनबाड़ी केंद्र कोला प्रथम 2014 में निर्माण होने के कारण आज तक संचालित नहीं हो सका जिसको संचालित कराया जाय और अवैध कब्जेदारों को हटाया जाय , सोहावल क्षेत्र फल पट्टी एरिया घोषित है स सलारपुर से लेकर लोहिया पुल तक आस पास हाईवे किनारे लगे बागों में प्लाटिंग का कार्य भू माफियाओं द्वारा हरे आम के पेड़ को बिना किसी आदेश के वन विभाग और पुलिस के मिलीभगत से रातो रात काट दिया जाता है रोक लगाया जाय जिससे वातावरण दूषित ना हो स अर्थर ग्राम सभा में नलकूप संख्या 13 महीनों से बंद पड़ा है स जिसकी नालियां भी जगह–जगह टूट गई हैं जिससे किसानों की सिंचाई बाधित हो रही है स जिसे सही कराया जाय , मगलसी ग्राम सभा में हर घर जल योजना के तहत लगायी गयी पानी की टंकी महीनों से सप्लाई बाधित है और पानी का बिल बराबर वसूला जा रहा है उसको सही कराया जाय ,बढ़ते हुए डेंगू के प्रकोप को देखते हुए क्षेत्र में एंटी लारवा का छिड़काव कराया जाय स आज समस्याओं को लेकर तहसीलदार पवन कुमार गुप्ता को ज्ञापन सौंपा और कहाकि शासन–प्रशासन अगर किसानों की समस्याओं में हीला हवाली करता रहा तो किसान यूनियन आंदोलन पर बाध्य होगीस जिसकी जिम्मेदारी शासन प्रशासन की होगी पंचायत में प्रमुख रूप से जवाहर लाल तिवारी अरशद आलम मोनू मोहम्मद समीम राइन मंगरु राम जमील अहमद नरेंद्र विश्वकर्मा जब्बार अहमद राम सहाय मौर्य जगत राम शेषनाथ सिंह बुधराम सूर्यनारायण विश्वकर्मा सुख देव सिंह राजू निषाद लाजवंती लालमति सहित यूनियन के कार्यकर्ता मौजूद रहे।

जश्ने गौसुलवारा का हुआ भव्य आयोजन

मिल्कीपुर(अयोध्या) ।चौकी क्षेत्र बारून बाजार के मेहदौना पठनैय्या खास में भव्य जश्ने गौसुलवारा का आयोजन किया गया।गांव की जामा मस्जिद के सामने विशाल जलसे में हजारों की संख्या में इस्लाम धर्म से जुड़े लोगों का जमावड़ा रहा।जलसे के मुख्य अतिथि अल्लामा मौलाना खुर्शदिल इस्लाम किछौछवी ने फरमाया कि गौसे आजम अपनी आवाम से बहुत मोहब्बत करते थे।गौसे आजम को अल्लाह ताला ने इतनी ताकत दी थी कि वे मुर्दों को भी जिंदा कर दिया करते थे।उनकी पूरी जिंदगी आलमे इस्लाम को समर्पित थी। इससे पहले जलसे के विशिष्ट अतिथि कारी जलालुद्दीन ने कुरान की आयतों की तिलावत के साथ जलसे की शुरुआत किया और बताया कि दुनिया के मुसलमानों को गौसे आजम के बताए रास्ते पर चलना चाहिए।गौसुलवारा जलसे की अध्यक्षता मौलाना अल्ताफ हुसैन तथा संचालन कारी सरफराज अहमद नूरी ने किया।जलसे को मौलाना मोहम्मद मोहतमिम,मौलाना अहमद रजा, हजरत तस्लीम रजा बरेलवी,मौलाना जासिम फैजाबादी आदि आलिमो ने जलसे को संबोधित करते हुए दीन और इस्लाम की बातें बताई।जलसे में प्रमुख रूप से तालिब खान,बब्बर खान,शकील खान, शब्बू खान,मोहम्मद कलीम खान, इश्तियाक खान,फिरोज खान समेत हजारों की संख्या में लोग मौजूद रहे।

एनजीटी की आरे से गठित चार सदस्यों की कमेटी ने की जांच

-तिलोदकी गंगा के प्रवाह को रोककर बनाई गई बहुमंजिला इमारत

अयोध्या । तिलोदकी गंगा के अस्तित्व को बचाने के लिए एनजीटी की ओर से गठित चार सदस्यों की हाई पावर कमेटी आज अयोध्या पहुंचीस कमेटी के सदस्यों ने चांदपुर स्थित गंगा के ऊपर उसके प्रवाह को रोककर बनी बहुमंजिला इमारत को देखासटीम ने गंजा स्थित 25 बीघा का कुंड भी देखा जिसका लैंड यूज चेंजकर श्रीराम एयरपोर्ट मे कर दिया गया है। टीम के सदस्यों ने ग्राम सभा जनौरा,गंजा के पास लगभग एक किलोमीटर तक तहस नहस हुई तिलोदकी गंगा को भी देखा और जल का सैंपल लियासचार सदस्यीय कमेटी में राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड लखनऊ,नागरिक उड्डयन विभाग लखनऊ,जिला मजिस्ट्रेट अयोध्या,नगर निगम अयोध्या को एक माह के अंदर जांच कर रिपोर्ट देने निर्देश दिया था। इसमें पड़ने वाले कुंड को जनहित याचिका भी दाखिल हैस जिसका सिविल नम्बर 9651ध 2021है. एक सामाजिक संस्था ने त्रिलोद की गंगा के अतिक्रमण पर जनहित याचिका भी दाखिल की है। सोहावल से निकलकर जनौरा गंजा घाट 48 किलोमीटर लंबे बाध तिलोदकी गंगा जो राजस्व अभिलेखों में बाहा के रूप में दर्ज है को बचाने की मुहिम में माननीय उच्च न्यायालय में सरयू नगर विकास विकास समिति अयोध्या के अध्यक्ष अवधेश कुमार सिंह ने एक जनहित याचिका संख्या 647 ध 2022 दाखिल की एवं उनके वकील ओंकार नाथ तिवारी के द्वारा यह बहस की गई कि कलेक्टर की ओर से बाहा तिलोदकी गंगा का स्वरूप धारा 77 भू राजस्व संहिता के तहत बदलकर उसे बंजर में परिवर्तित कर हुए हवाई अड्डे के विस्तार के लिए जमीन दे दिया गया। इससे नैसर्गिक प्रवाह व वर्षा जल का बहाव रोक दिया गया है।

निर्वाचक नामावली पुनरीक्षण कार्य की समीक्षा की गयी

उन्नाव। संयुक्त निर्वाचन आयुक्त, राज्य निर्वाचन आयोग, उत्तरप्रदेश, सुधा वर्मा द्वारा पीडब्ल्यूडी गेस्ट हाउस में नगरीय निकाय निर्वाचक नामावली पुनरीक्षण कार्य की समीक्षा की गयी। इस मौके पर संयुक्त निर्वाचन आयुक्त ने नगरीय निकायों के पुनरीक्षण कार्य की समीक्षा करते हुए कहा कि विस्तारितध नवसृजितध उच्चीकृत नगरीय निकायों में किसी भी मतदाता का नाम मतदाता सूची में सम्मिलित होने से छूटने न पाए।उन्होंने कहा कि इस पर विशेष ध्यान दिया जाये।उन्होंने सम्बन्धित उपजिलाधिकारियों को निर्देश दिए कि मतदाता सूची में किसी का नाम विलोपित किये जाने से पूर्व स्वयं भी तथ्यों की जॉच किये जाने एवं रेण्डमली घर जाकर चौक कर लें, ताकि कोई भी मतदाता निर्वाचन में मतदान करने से वंचित न रह जाए।उन्होंने यह भी कहा कि जिन ग्राम पंचायतों में प्रधान निर्वाचित हैं और वे ग्राम पंचायत निकायों के विस्तारितध नवसृजितध उच्चीकृत होने के कारण नगरीय निकायों में शामिल हो गई हैं, उनके निर्वाचित प्रतिनिधियों तथा निर्वाचन में उम्मीदवारों से भी सम्पर्क कर यह सुनिश्चित किया जाए कि कोई मतदाता निर्वाचक नामावली में सम्मिलित होने से छूट तो नहीं गया है। समीक्षा के दौरान एडीएम वित्त एवं राजस्व नरेंद्र सिंह, एसडीएम सदर नूपुर गोयल सहित एसडीएम बीघापुर, सफीपुर, एसडीएम हसनगंज अंकित शुक्ला आदि लोग मौजूद रहे।

पूर्वी उत्तर प्रदेश में तीन दिन बाद सर्द बढ़ने आसार

मिल्कीपुर–अयोध्या । नवंबर का पहला सप्ताह बीतने के बाद ही सर्दी कदम ठिठके से लग रहे हैं। मौसम वैज्ञानिकों के मुताबिक सर्दी में अमूमन पश्चिमी हवाएं चलने से पारे में गिरावट आती है लेकिन अभी तक पूर्वी हवाएं भी चल रही है। 12 नवंबर तक पश्चिमी हवाएं चलने से तापमान में गिरावट आने के आसार हैं। सुबह हल्की धुंध छाई रही इसके बाद मेरे से मौसम साफ हो गया। रात में भले ही हल्की सर्दी का अहसास हो रहा हो लेकिन दोपहर में तेज धूप खिल रही है। इस कारण नवंबर के पहले सप्ताह तक दिन का तापमान 30 और 31 डिग्री सेल्सियस के बीच बरकरार है, जबकि साल 2020 और साल 2021 में या 28 और 29 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया था। तरह रात का पारा 12 और 14 डिग्री सेल्सियस तक गिर गया था लेकिन इस वर्ष अब तक यह 17 से 19 डिग्री सेल्सियस के बीच दर्ज हो रहा है। मिल्कीपुर क्षेत्र में . .दिन का पारा अधिकतम 29 डिग्री सेल्सियस तथा न्यूनतम 16.5 डिग्री सेल्सियस रहा, जबकि इससे पहले न्यूनतम तापमान 19 डिग्री सेल्सियस पहुंच गया था। आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कुमारगंज अयोध्या के मौसम वैज्ञानिक सीताराम मिश्रा ने बताया कि 12 नवंबर तक पश्चिमी हवाएं चलने की आसार है, फिलहाल पूर्वी हवाएं चल रही है इससे तापमान में ज्यादा गिरावट नहीं हो रही है। इसके अलावा हवा में नमी भी है हवा में नमी ज्यादा होने से तापमान में कमी नहीं आती इस कारण लगातार तापमान औसत से अधिक दर्द हो रहा है। आगामी 24 घंटे में पूर्वी उत्तर प्रदेश में आंशिक बादल छाए रहने की संभावना है वर्षा होने की कोई संभावना नहीं है।

महिला का घर जलाने के आरोप में सपा विधायक और उनके भाई के खिलाफ एफआईआर दर्ज

करीब 15 थानों की पुलिस फोर्स ने घर में दी दबिश,दोनों भाई फरार

कानपुर। सपा विधायक इरफान सोलंकी और उनके भाई रिजवान के खिलाफ जाजमऊ थाने में एफआईआर हुई है। उन पर एक महिला का घर जलाने का आरोप है। एफआईआर दर्ज होते ही भोर पहर करीब 15 थानों की पुलिस फोर्स ने उनके डिफेन्स कॉलोनी स्थित घर पर दबिश दी। मगर,दोनों भाई फरार हो गए। पता चला है कि इरफान सोलंकी लखनऊ में सपा कार्यालय पहुंचे हैं। उधर, पुलिस की दबिश और इरफान सोलंकी के भाग निकलने के बाद उनकी बेटी ने खुद एक वीडियो सोशल मीडिया पर पोस्ट किया। इरफान ने भी 2 वीडियो शेयर करके पुलिस पर आरोप लगाए हैं।

थानाध्यक्ष निलंबितः बता दें कि इरफान सोलंकी सीसामऊ से सपा विधायक हैं। पिछले दिनों जाजमऊ में एक मकान में आग लगा दी गई थी। पीड़ित परिवार ने विधायक इरफान के भाई पर आग लगवाने का आरोप लगाया था। इस मामले में जाजमऊ थानाध्यक्ष ने कार्रवाई नहीं की। पुलिस कमिश्नर ने इसको लापरवाही मानते हुए थानाध्यक्ष अभिषेक शुक्ला को निलंबित कर दिया। उनकी जगह किदवई नगर थाना प्रभारी अशोक कुमार दुबे को भेजा गया है। किदवई नगर की जिम्मेदारी अपर पुलिस आयुक्त मुख्यालय, अपराध में तैनात रहे नीरज ओझा को दी है। वहीं पुलिस ने इरफान की कार को जब्त किया है। साथ ही उनकी पत्नी नसीम सोलंकी की भी फिलहाल थाने में हैं। उनसे पूछताछ की जा रही है। डीसीपी पूर्वी रविन्द्र कुमार ने बताया कि आरोपियों को पकड़ने के लिए टीम बना कर दबिश दी जा रही है। उन्होंने बताया कि थाना जाजमऊ में महिला का प्लॉट कब्जा करने और आग लगाने की गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज हुआ है। इस मामले में कई अज्ञात की भी तलाश है।

भिखारी गैंग में शामिल मां–बेटे भेजे गए जेल

कानपुर। कानपुर में नौकरी का झांसा देकर बंधक बना सुरेश मांझी (30) को अंधा–अपाहिज कर भीख मंगवाने वाले राज नागर और उसकी मां को पुलिस ने देर शाम किदवई नगर से गिरफ्तार कर लिया। दोनों आरोपियों को पुलिस ने .जेल भेज दिया। वहीं,सुरेश को बेचने वाला मछरिया निवासी विजय अभी भी फरार है। पुलिस की तीन टीमें उसकी तलाश में लगाई गई हैं। नौबस्ता निवासी सुरेश को छह महीने पहले मछरिया निवासी विजय ने नौकरी लगवाने का झांसा दिया था। उसको घर से ले गया था और एक घर में बंधक बना लिया था। पीट–पीटकर उसके हाथ–पैर तोड़ दिए थे। केमिकल डालकर अंधा कर दिया था। उसके बाद दिल्ली में (नागलोई) में ले जाकर बेच दिया था। वहां उससे भीख मंगवाते थे। तबीयत बिगड़ने पर उसको वापस कानपुर छोड़ दिया था। बीते शुक्रवार को मामला पुलिस के पास पहुंचा था। तब केस दर्ज किया गया था। डीसीपी साउथ प्रमोद कुमार ने . प्रेस वार्ता के दौरान बताया कि सर्विलांस की मदद से बीते शुक्रवार को किदवई नगर से राज नागर और उसकी मां आशा को गिरफ्तार कर लिया गया है। विजय ने सुरेश को इन्हीं दोनों के हाथों बेचा था।

दोनों आरोपियों ने पूछताछ में पूरा मामला कबूल किया है और कई अहम खुलासे किए हैं। डीसीपी ने बताया कि,विजय और सुरेश मांझी पूर्व से परिचित है।

डीसीपी ने बताया कि सुरेश ने बताया था कि,विजय की बहन तारामती,जीजा राजेश ने 70 हजार में उसको बेचा गया था। जब आरोपियों से पूछताछ की गई, तो उन्होंने बताया कि सुरेश को उन्होंने 25 हजार रुपये में खरीदा था।

ये रकम उन्होंने विजय को दी थी। यह भी खुलासा हुआ कि राज व आशा दिल्ली नहीं बल्कि किदवई नगर के ही रहने वाले हैं। ये दोनों दिल्ली–हरियाणा बॉर्डर पर रहकर इसी तरह से लोगों से भीख मंगवाते हैं। वहीं सुरेश को बेचने वाला विजय अभी भी फरार है। पुलिस की तीन टीमें उसकी तलाश में लगाई गई हैं। डीसीपी ने बताया कि,पुलिस की टीम फिर से दिल्ली भेजी जाएगी ताकि गिरोह के बारे दिल्ली पुलिस से सहयोग लेकर और पुख्ता जानकारियां हासिल हो सके।

हटिया मेला में लोगो ने की रोजमर्रा की जरूरत आने वाली वस्तुओं की खरीदारी

उन्नाव। कार्तिक पूर्णिमा के बाद क्षेत्र में जगह जगह पर लगने वाली हटिया मेला में लोगों ने पहुंचकर जमकर खरीदारी की। हटिया मेला में महिलाओं व बच्चों ने अपने पसंद की वस्तुओं खिलौने खरीदे। मेले में बच्चों का उत्साह देखते ही बन रहा था। कार्तिक पूर्णिमा स्नान के बाद क्षेत्र में हटिया मेला का अपना एक अलग महत्व है। दूरदराज से आए लोग एक दिन विश्राम के बाद घरों को वापस लौटते हैं।

इस दौरान जगह–जगह पर कस्बाई इलाकों में लगी हटिया मेले में खूब खरीदारी की जाती है। क्षेत्र में चर्चित हटिया मेला भगवंत नगर, लखपेड़ीबाग, सुमेरपुर, रोजिहई, घाटमपुर हटिया मेला में सुबह से ही भीड़ रही कुछ हटिया मेला कई दिनों तक चलते है। जिसमें लोग अपने जरूरतमंद घर गृहस्ती की सामान खरीदते हैं। वही बच्चे हटिया मेला में लगे झूलों का आनंद उठाते हैं और खिलौनों की खरीदारी करते हैं वैसे हटिया मेला में जलेबी की अधिक बिक्री होती है तथा जलेबी की दुकान में साथियों के साथ लोग बैठकर जलेबी खाकर आनंद लेते हैं।

केंद्रीय कृषि ने डॉ. विनोद सिंह को चुना आईसीएआर का सदस्य

मिल्कीपुर–अयोध्या । केंद्रीय कृषि मंत्री एवं आई.सी.ए.आर (भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद) सोसाइटी के अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर ने आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के सह प्राध्यापक डा. विनोद सिंह को आई.सी.ए.आर सोसाइटी के जनरल बॉडी में सदस्य नामित किया है। कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डा. बिजेंद्र सिंह ने सदस्य चुने जाने पर डा. विनोद सिंह को बधाई एवं शुभकामनाएं दीं हैं। कृषि विश्वविद्यालय में अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग में विगत 35 वर्षों से शिक्षण एवं शोध का कार्य कर रहे डा. विनोद अब आई.सी.ए.आर के पटल पर किसानों की समस्याओं को रखेंगे और समाधान निकालने का प्रयास करेंगे। इन्होंने शोध के जरिए गेहूं की कई प्रजातियों को भी विकसित किया है। इनकी 12 पुस्तकें तथा विभिन्न शोध पत्र अंतरराष्ट्रीय व राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त जनरल में प्रकाशित हुए हैं। यही नहीं यह विभिन्न वैज्ञानिक समितियों के आजीवन सदस्य भी हैं। पर्यावरण एवं कृषि क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों हेतु इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर इनवायरमेंटल प्रोटेक्शन द्वारा एफ.आई.एस.ई.पी फेलोशिप प्रदान की गई है। इन्हें विभिन्न वैज्ञानिक संस्थानों द्वारा उत्कृष्ट कार्यों हेतु सम्मानित किया जा चुका है। सदस्य नामित किए जाने पर कृषि विश्वविद्यालय के कर्मचारियों, वैज्ञानिकों एवं शिक्षकों ने खुशी व्यक्त की है।

राजस्व की वसूली मे तेजी लाकर शत–प्रतिशत लक्ष्य को करें पूर्णः जिलाधिकारी

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। राजस्व कार्यो, कर–करेत्तर, की समीक्षा बैठक जिलाधिकारी संजीव रंजन की अध्यक्षता एवं अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) उमाशंकर की उपस्थिति में कलेक्ट्रेट सभागार में सम्पन्न हुई।

जिलाधिकारी संजीव रंजन ने समस्त उपजिलाधिकारियों/तहसीलदार को निर्देश देते हुए कहा कि सभी कोर्ट केस अपडेट करे। जिलाधिकारी संजीव रंजन ने बैठक में उपस्थित समस्त एस0डी0एम0 व तहसीलदार को निर्देश दिया कि तहसीलों की मासिक रिपोर्ट भेजने का निर्देश दिया। जिलाधिकारी ने समस्त तहसीलदारों को निर्देश दिया कि राजस्व की वसूली मे तेजी लाकर शत–प्रतिशत लक्ष्य पूर्ण करे। जिलाधिकारी संजीव रंजन ने जिला आबकारी अधिाकरी को शासन से प्राप्त लक्ष्य के सापेक्ष शत–प्रतिशत वसूली बढ़ाने का निर्देश दिया।

इसके साथ ही बाट–माप, परिवहन, विद्युत को कैम्प लगाकर वसूली बढ़ाने का निर्देश दिया। जिलाधिकारी ने बाट–माप तथा खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन विभाग को बाजारो में दुकानो को चेक करने का निर्देश दिया। वाणिज्य कर, आबकारी, परिवहन, विद्युत, खनन विभागो का लक्ष्य के सापेक्ष वसूली कम होने पर नाराजगी व्यक्त करते हुए लक्ष्य बढ़ाने का निर्देश दिया गया। इसके अलावा स्टाम्प कर, भू–राजस्व वसूली, व्यापार कर, वन विभाग, मण्डी समिति, खनन विभाग, आय, जाति एवं निवास प्रमाण पत्र तथा अन्य विभागों की समीक्षा की गयी तथा शत–प्रतिशत लक्ष्य पूर्ण कराये जाने का निर्देश दिया गया। बाजारो में पॉलीथीन का प्रयोग न हो इसके लिए दुकानो की जांच कराने का निर्देश दिया। इस बैठक में उपरोक्त के अतिरिक्त समस्त उपजिलाधिकारी, उपजिलाधिकारी (न्यायिक) प्रियंका चौधरी, समस्त तहसीलदार, ए0आई0जी0 स्टाम्प राजेश सिंह, ए0आर0टी0ओ0, अधिशासी अभियन्ता विद्युत सिद्धार्थनगर, समस्त अधिशासी अधिकारी नगर पालिका/नगर पंचायत, तथा अन्य सम्बन्धित अधिकारी उपस्थित थे।

50,000 का ईनामिया शातिर गौतस्कर सलीम हैदर सैय्यद उर्फ फरू गिरफ्तार

दैनिक बुद्ध का संदेश

डुमरियागंज/सिद्धार्थनगर। पंजीकृत मु0अ0सं0 175/22 धारा 429 भा0द0वि0 व धारा 3/5/8 गोवध अधिनियम व थाना इटवा पर पंजीकृत मु0अ0सं0 132/22 धारा 3/5/8 गोवध अधिनियम में 50,000/–के ईनामिया बदमाश की गिरफ्तारी हेतु अमित कुमार आनन्द, पुलिस अधीक्षक सिद्धार्थनगर के द्वारा एक विशेष पुलिस टीम का गठन किया गया था, जिसमें गठित टीम द्वारा पुलिस महानिदेशक महोदय द्वारा गौवंस का वध व तस्करी करने वालो के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में सिद्धार्थ, अपर पुलिस अधीक्षक सिद्धार्थनगर के पर्यवेक्षण व राणा महेन्द्र प्रताप सिंह, क्षेत्राधिकारी डुमरियागंज के निर्देशन में संजय कुमार मिश्र, प्रभारी निरीक्षक डुमरियागंज व एस0ओ0जी0/सर्विलांस टीम दिनांक 09–11–2022 को खैर टेक्निकल कालेज डुमरियागंज से समय रात्रि 11.30 बजे से पुलिस टीम द्वारा पकड़ लिया गया । पुर्व में मुकदमा उपरोक्त में पांच अभियुक्तो की गिरफ्तारी की गई थी शेष दो अभियुक्त पर पुलिस उपमहानिरीक्षक बस्ती परिक्षेत्र –बस्ती द्वारा प्रत्येक पर

50,000 रुपये का पुरस्कार घोषित किया गया था जिसमे अभियुक्त संजु अहमद फारुकी उर्फ रौआब अली पुत्र मोहम्मद शरीफ फारुकी निवासी बसडिलिया थाना डुमरियागंज जनपद सिद्धार्थनगर कि गिरफ्तारी पूर्व में की गयी थी। एक इनामिया अभियुक्त सलीम हैदर सैय्यद पुत्र अजीम हैदर की गिरफ्तारी पुलिस टीम द्वारा की गयी।

विकास खण्ड मिठवल कार्यालय परिसर का मुख्य विकास अधिकारी ने किया निरीक्षण

दैनिक बुद्ध का संदेश

बांसी/सिद्धार्थनगर। पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार गुरुवार को मुख्य विकास अधिकारी जयेंद्र कुमार द्वारा विकास खण्ड मिठवल कार्यालय परिसर का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के समय खण्ड विकास अधिकारी मिठवल सतीश सिंह, सहित सहायक विकास अधिकारी पंचायत, अतिरिक्त कार्यक्रम अधिकारी मनरेगा अन्य अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित पाये गये। खण्ड विकास अधिकारी के कार्यालय के सभी पटल पर अभिलेखों का रखरखाव एवम पत्रावली का अवलोकन किया गया। स्थापना पटल पर वरिष्ठ सहायक विजय कुमार की सर्विस बुक एवम ग्राम पंचायत अधिकारी पंचराजी देवी एवं दुर्गेश कुमार के जीपीएफ पासबुक का अवलोकन किया गया।

सभी कर्मचारी की सेवा सत्यापित करने तथा जीपीएफ एवम एनपीएस कटौती का अंकन करने के निर्देश दिया गया। सम्बन्धित पटल सहायक को आरटीआई एवम जन सुनवाई रजिस्टर में सभी सन्दर्भ की अख्या अंकित करने तथा समय से निस्तारण करने के निर्देश दिया गया। लेखा पटल पर ग्रांट रजिस्टर के पार्ट 1, 2, 3 का अवलोकन किया गया। पार्ट 3 के अनुसार अवशेष धनराशि को संबंधित को वापस करने के निर्देश दिया गया। कार्यालय में साफ सफाई संतोषजनक पाया गया। कार्यालय के कुछ दीवाल पर सीलन पाया गया। खण्ड विकास अधिकारी को निर्देशित किया गया कि अनुरक्षण मद की धनराशि से मरम्मत एवम रंगाई पुताई करावे। मनरेगा सेल में निर्माण कार्य की पत्रावली एवम अन्य अभिलेख ग्राम पंचायतवार रैक में रखा गया था। मनरेगा से ग्राम पंचायत कोल्हुई में मस्जिद से मकबूल के चक तक नाला खुदाई कार्य के पत्रावली का अवलोकन किया गया। जिसमें डिमांड के सापेक्ष श्रमिक की उपस्थिति एवम श्रमिक के अंगूठा का निशान के साथ नाम अंकित नहीं किए गया था। खण्ड विकास अधिकारी को निर्देशित किया गया कि योजना के अंतर्गत निर्धरित 8, 4, 9 के मानक एवम चेक लिस्ट के अनुसार पत्रावली में अभिलेख संरक्षित किया जाय। विकास खण्ड में निर्मित पार्क में घास लगाने तथा फूल के पौध लगाने के निर्देश दिया गया। परिसर में लगा एनआरएलएम योजना का बोर्ड टूट गया था, जिसे ठीक कराने के निर्देश दिया गया।

श्रेष्ठ वैज्ञानिकों की सूची में सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर देवेश कुमार

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के परिसर के अधिष्ठाता विज्ञान संकाय तथा भौतिक विज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर देवेश कुमार को स्टीफेंस विश्वविद्यालय द्वारा दुनिया के 2% वैज्ञानिकों के सूची में स्थान दिया गया है। दुनिया के दो प्रतिशत श्रेष्ठ वैज्ञानिकों की सूची में नाम आने पर अपने बधाई में कुलपति प्रोफेसर हरि बहादुर श्रीवास्तव ने कहा कि विश्वविद्यालय के समस्त शिक्षकों विद्यार्थियों कर्मचारियों और विशेष रूप से इस आकांक्षी जनपद सिद्धार्थनगर के लिए यह क्षण अत्यंत ही महत्वपूर्ण और मूल्य वाची उपलब्धि का है। इस प्रकार की उपलब्धियों से शिक्षा समाज को बड़ी प्रेरणा प्रदान होती है। प्रोफेसर देवेश कुमार को अंतर विषयक शोध कार्य जो सामान्य रसायन विज्ञान से संबंधित है एंजाइम द्वारा दवा या अन्य हानिकारक पदार्थों का मेटाबॉलिज्म का कंप्यूटर द्वारा अध्ययन करने पर प्राप्त हुआ है। भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में प्रोफेसर देवेश कुमार को महत्वपूर्ण मुकाम हासिल है। उन्हें 8500 स्टेशन तथा 51 इंडेक्स प्राप्त है उनका आई टेन 80 है। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में से पूर्व प्रवेश कुमार 11 वर्ष तक बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय लखनऊ में शिक्षक के रूप में कार्य कर चुके हैं। दुनिया के दो प्रसिद्ध वैज्ञानिकों की सूची में प्रो देवेश कुमार का नाम अंकित होने से विद्यालय परिवार के सभी शिक्षकों अधिकारियों कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों ने बधाई दी है। उक्त जानकारी सूचना जनसंपर्क अधिकारी डॉ अविनाश प्रताप सिंह ने दी है।

लेखपालों का कार्य वहिष्कार कर धरना सोमवार से

सिद्धार्थनगर। उत्तर प्रदेश लेखपाल संघ तहसील इकाई नौगढ़ द्वारा आपात बैठक में लिए गये निर्णय के क्रम में तहसील

के सभी लेखपाल सम्पूर्ण कार्य बहिष्कार कर सोमवार से अनिश्चित कालीन धरना प्रदर्शन करेंगे। गुरुवार को तहसील इकाई के अध्यक्ष सुधीर श्रीवास्तव की अध्यक्षता एवं मन्त्री देवानन्द के संचालक में तहसील सभाकक्ष में हुए बैठक में पाँच सूत्रीय मांग पत्र उपजिलाधिकारी को सौपा गया मांगे रविवार तक न माने जाने पर सोमवार से सम्पूर्ण कार्य वहिष्कार कर धरना प्रदर्शन का निर्णय लिया गया है। मांगो में लेखपाल रामकरन गुप्ता के साथ अभद्रता करने वाले के खिलाफ कार्यवाही किये जाने, लेखपाल अनंगनाथ शुक्ला के विरुद्ध विभागीय कार्यवाही समाप्त किये जाने,लेखपाल मनोज त्यागी का बकाया वेतन दिए जाने की मांग की गई है। बैठक में कृष्णनाद चौधरी, महेन्द्र साहनी, प्रमोद श्रीवास्तव, कृष्ण भूषण द्विवेदी, अनूप यादव, रामकरन गुप्ता, बिंदुसार मौर्य, योगेन्द्र वर्मा, सुबोध गुप्ता, दिलीप, रामशंकर यादव, शिव शंकर, श्रीवास्तव, गणेश त्रिपाठी, दुर्गेश पाण्डेय, देवेन्द्र त्रिपाठी, राहुल, राजेश, रामकुमार, कमलेश, श्रद्धा सुमन सिंह, ज्योति सिंह, प्रीति लता पाण्डेय, प्रवीण शर्मा आदि उपस्थित रहे।

आने वाले निकाय चुनाव में भाजपा का परचम लहराना हैः राम जियावन मौर्य

भाजपा के युवा नेता विष्णु जयसवाल ने सभी को अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया

दैनिक बुद्ध का संदेश

बांसी/सिद्धार्थनगर। बृहस्पतिवार को जिला प्रशिक्षण वर्ग भारतीय जनता पार्टी पिछड़ा वर्ग मोर्चा का आयोजन रानी लक्ष्मी विवाह वाटिका में किया गया प्रशिक्षण वर्ग के मुख्य अतिथि राम जियावन मौर्य रहे। उन्होंने प्रशिक्षण के दौरान कहा कि सभी को संगठित होकर आने वाले निकाय चुनाव में भाजपा का परचम लहराना है प्रशिक्षण का समापन सत्र भाजपा जिला अध्यक्ष गोविंद माधव ने अपने उद्बोधन में कहा कि पिछड़ा वर्ग का भारतीय जनता पार्टी में बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान भाजपा गठन से लेकर वर्तमान समय तक पिछड़ों की महत्वपूर्ण भूमिका रही पिछड़ा वर्ग की अध्यक्षता पिछड़ा वर्ग के जिला अध्यक्ष रामशरण मौर्या ने किया और संचालन पिछड़ा वर्ग के महामंत्री फूलचंद जायसवाल ने किया समापन के बाद भारतीय जनता पार्टी के युवा नेता विष्णु जयसवाल (सोनू) ने मुख्य अतिथि व पदाधिकारी व कार्यकर्ताओं को अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया इस दौरान मुख्य अतिथि में विजय कांत चतुर्वेदी, निलेश चौधरी ,दुर्गा प्रसाद गुप्ता, दयाराम लोधी, बलराम कुलश्रेष्ठ, व आनंद मणि त्रिपाठी, गौरी शंकर अग्रहरी, कुबेर बारी ,जगजीवन गौड़, शिवम कश्यप सुरभान जयसवाल, उमेश गौड़, अमरनाथ अग्रहरि सहित काफी संख्या में कार्यकर्ता व पदाधिकारी उपस्थित रहे।

तहसील स्तरीय क्रीड़ा प्रतियोगिता से वंचित रहा शोहरतगढ़ तहसील

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। मौजूदा समय में जब लगभग सभी तहसीलों में बेसिक शिक्षा विभाग तहसील स्तरीय क्रीड़ा प्रतियोगिता का आयोजन करवा रहा है तब आखिर शोहरतगढ़ तहसील में तहसील स्तरीय क्रीड़ा प्रतियोगिता का आयोजन क्यों नहीं हो रहा है। 11 नवंबर से जिला मुख्यालय पर आयोजित होने वाले जिला स्तरीय क्रीड़ा प्रतियोगिता में शोहरतगढ़ तहसील किस मानक के अनुरूप बच्चों को प्रतिभाग करने के लिए भेजेगा, जबकि यहां तहसील स्तरीय क्रीड़ा प्रतियोगिता हुई ही नहीं। गत चार नवंबर से पूर्व में निर्धारित दो दिवसीय ब्लाक स्तरीय क्रीड़ा प्रतियोगिता को विधानसभा क्षेत्र के बढ़नी और शोहरतगढ़ में क्यों अचानक एक ही दिन में समाप्त कर दिया गया। ब्लाक स्तरीय क्रीड़ा प्रतियोगिता में विजेता छात्र–छात्राओं को विगत वर्षों की भांति शोहरतगढ़ व बढ़नी ब्लॉक में पुरस्कार क्यों नहीं बांटा गया। एक तरफ केन्द्र व प्रदेश सरकार के खेलों इंडिया व फिट इंडिया जैसे खेलों को बढ़ावा देने वाली योजनाओं को लागू कर रही है, वहीं बेसिक शिक्षा विभाग सिद्धार्थनगर खेलों का आयोजन न कर केन्द्र व प्रदेश सरकार की सोच को पलीता लगाने का काम कर रही है।

कृषि विभाग ने कराया क्रॉप कटिंग

दैनिक बुद्ध का संदेश

उसका बाजार/सिद्धार्थनगर। विकास खण्ड उसका बाजार के विनैका गांव में कृषि विभाग ने किसान रूवाबअली पुत्र छोटकान के खेत का क्रॉप कटिंग किया गया। वही किसान के खेतो को 43.33 वर्ग मीटर के खरीफ फसल को क्रॉप कटिंग कराया गया और फीता के माध्यम से मापने के बाद क्रॉप कटिंग करवाया गया वही सुरेश त्रिपाठी कानूनगो ने बताया की 43.33 वर्ग मीटर लिया गया है जिसमे से 19 किलो धान निकला अलग अलग गांव में क्रॉप कटिंग किया गया।

क्या है क्रॉप कटिंग

अगर आप सब क्रॉप कटिंग के बारे में नही जानकारी है तो जान ले क्रॉप कटिंग के प्रयोग द्वारा फसल की औसत पैदावार निकाली जाती है क्रॉप कटिंग के आधार पर ही क्षेत्र के कृषि उत्पादन के आंकड़े तैयार करके शासन को भेजे जाते है इसी के द्वारा प्राप्त आंकड़ों के आधार पर फसल बीमा आधार पर फसल नुकसान का मुआवजा दिया जाता है। कृषि उपनिदेशक अरविंद कुमार विश्वकर्मा, अशोक यादव लेखपाल, रणधीर राणा, प्रशांत कुमार वर्मा बीटीएम आदि लोग रहे मौजूद।

सम्पादकीय

यदि पराली जलाने वाले दस–बीस दोषियों को भी दंडित किया गया होता तो हजारों किसान उनसे सबक सीखते। हमारे किसान लोग बहुत भले हैं। उनमें अद्भुत परंपरा प्रेम होता है। सरकारों, समाजसेवियों और धर्मध्वजियों को चाहिए कि वे हमारे किसानों को प्रदूषण–मुक्ति के लिए प्रेरित करें। उनकी प्रेरणा...

कैसे करें प्रदूषण को काबू?

दिल्ली, पंजाब, हरियाणा और उ.प्र. के सीमांत क्षेत्रों में प्रदूषण इतना बढ़ गया है कि इन प्रांतों ने तरह–तरह के प्रतिबंधों और सावधानियों की घोषणा कर दी है। जैसे बच्चों की पाठशालाएं बंद कर दी हैं, पुरानी कारें सड़कों पर नहीं चलेंगी, बाहरी ट्रक दिल्ली में नहीं घुस पाएंगे, सरकारी कर्मचारी ज्यादातर काम घर से ही करेंगे। लोगों से कहा गया है कि वे मुखपट्टी का इस्तेमाल बढ़ाएं, घर के खिड़की–दरवाजे प्रायरू बंद ही रखें और बहुत जरुरी होने पर ही बाहर निकलें। ये सब बातें तो ठीक हैं और मौत का डर ऐसा है कि इन सब निर्देशों का पालन लोग–बाग सहर्ष करेंगे ही लेकिन क्या प्रदूषण की समस्या इससे हल हो जाएगी? ऐसा नहीं है कि खेती सिर्फ भारत में ही होती है और खटारा ट्रक और मोटरें भारत में ही चलती हैं। भारत से ज्यादा ये अमेरिका, यूरोप और चीन में चलती हैं। वहां हमसे ज्यादा प्रदूषण हो सकता है लेकिन वहाँ क्यों नहीं होता? क्योंकि वहां की जनता और सरकार दोनों सजग हैं और सावधान हैं। चीन ने पिछले कुछ साल में 40 प्रतिशत प्रदूषण कम किया है और हमारी दिल्ली प्रदूषण के रेकार्ड तोड़ रही है। इसकी गिनती दुनिया के सबसे प्रदूषित शहरों में होती है। दिल्ली में दो सरकारें हैं। वे निढाल साबित हो रही हैं। अब कुछ लोग सर्वोच्च न्यायालय की शरण में जा रहे हैं। प्रदूषण रोकने के लिए अदालत का दरवाजा खटखटाया जाए, क्या यह बात किसी भी सरकार और जनता के लिए शोभनीय है? सरकारों ने इस दिशा में कुछ कोशिश जरुर की है। उन्होंने हजारों करोड़ रु. की सहायता करके किसानों को मशीने दिलवाई हैं ताकि वे पराली का चूरा करके उसे खेतों में दबा सकें लेकिन हमारे किसान भाई अपने घिसे–पिटे तरीकों से चिपटे हुए हैं। उनकी मशीनें पड़ी–पड़ी जंग खाती रहती हैं। पंजाब और हरियाणा में पिछले 15 दिनों में पराली जलाने के कई हजार मामले सामने आए हैं लेकिन उनको दंडित करनेवाला कोई आंकड़ा कहीं प्रकट नहीं हो रहा है। सभी पार्टियां एक–दूसरे की टांग खींचने में मुस्तैदी दिखा रही हैं लेकिन वोट के लालच में फंसकर वे लाचार हैं। यदि पराली जलाने वाले दस–बीस दोषियों को भी दंडित किया गया होता तो हजारों किसान उनसे सबक सीखते। हमारे किसान लोग बहुत भले हैं। उनमें अद्भुत परंपरा प्रेम होता है। सरकारों, समाजसेवियों और धर्मध्वजियों को चाहिए कि वे हमारे किसानों को प्रदूषण–मुक्ति के लिए प्रेरित करें। उनकी प्रेरणा का महत्व सरकारी कानूनों से कहीं ज्यादा उपयोगी सिद्ध होगा। यदि हम भारतीय लोग इस दिशा में कुछ ठोस काम करके दिखा सकें तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि लाहौर और काठमांडो जैसे पड़ौसी देशों के शहर भी प्रदूषण–मुक्त हो सकेंगे। प्रदूषित या स्वच्छ हवा को आप शासकीय और राष्ट्रीय सीमा में बांधकर नहीं रख सकते। उसके एक देश से दूसरे देश में जाने के लिए पासपोर्ट और वीजा की जरुरत नहीं होती।

अब तो भ्रम से निकलें!

अब समय है, जब धनी देशों की आंख खुले। जिस समय दुनिया जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र के 27वें सम्मेलन के लिए तैयार हो रही है, ये तथ्य सामने आया है कि ग्लोबल वॉर्मिंग के कारण सबसे ज्यादा गर्म यूरोप का वातावरण हुआ है। अगर धनी देश इस भ्रम में थे कि अपनी समृद्धि और व्यवस्थागत कौशल के कारण वे जलवायु परिवर्तन की मार से बचे रहेंगे, तो अब उनकी आंख खुल जानी चाहिए। जिस समय दुनिया जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र के 27वें सम्मेलन के लिए तैयार हो रही है, ये तथ्य सामने आया है कि ग्लोबल वॉर्मिंग के कारण सबसे ज्यादा गर्म यूरोप का वातावरण हुआ है। साफ है कि जलवायु परिवर्तन की मार देर–सबेर सब पर पड़ेगी। ताजा रिपोर्ट गैर सरकारी संस्था– विश्व मौसम विज्ञान संस्थान (डब्लूएमओ) ने जारी की है। उसके मुताबिक गुजरे 30 साल में पृथ्वी के दूसरे भूभागों की तुलना में यूरोप करीब दोगुनी तेजी से गर्म हुआ है। रिपोर्ट के मुताबिक इस गर्मी की वजह से यूरोप भीषण सूख भी झेल रहा है और तेजी से आल्प्स के ग्लेशियर भी खो रहा है। यह गर्मी भूमध्यसागर को भी तपा रही है।

यूरोप गर्म होती दुनिया की लाइव तस्वीर पेश कर रहा है और बता रहा है कि अच्छी तरह तैयार समाज भी मौसमी अति की घटनाओं से सुरक्षित नहीं हैं। गौरतलब है कि 1991 से 2021 के बीच यूरोप का औसत तापमान हर दशक में 0.5 डिग्री सेल्सियस बढ़ा। इसी समयावधि में बाकी दुनिया का तापमान हर दसवें साल में 0.2 डिग्री सेल्सियस के औसत से बढ़ा। 2021 में जलवायु परिवर्तन की वजह से यूरोप में इतनी मौसमी आपदाएं आईं कि 50 अरब डॉलर का नुकसान हुआ। ताजा रिपोर्ट ने बताया है कि यूरोप का ज्यादातर इलाका उप–आर्कटिक और आर्कटिक क्षेत्रों से मिलकर बना है। इस वजह से गर्मियों में यूरोप के ऊपर कम बादल मंडरा रहे हैं, जिससे सूरज की सीधी किरणें सतह पर पहुंचकर तपिश पैदा कर रही हैं। कुछ वैज्ञानिक यूरोप को हीटवेब का हॉटस्पॉट कह रहे हैं। छह नवंबर से मिस्र एक शर्म अल शेख में विश्व जलवायु सम्मेलन कॉप–27 शुरू हो रहा है। अगर धनी देशों की आंख कुल गई हो, तो उनके नेता वे वहां कुछ ऐसे फैसले ले सकते हैं, जिससे धरती के तापमान में वृद्धि को रोका जा सकेगा। ऐसे कदम उठाए गए, तो सारी दुनिया सुरक्षित होगी।

चुनावी बॉन्ड की पारदर्शिता पर सवाल

सरकार अगर वाकई चुनावों में पारदर्शिता और ईमानदारी से वित्तप्रबंध करना चाहती है, तो उसे इस विषय के जानकार लोगों और अन्य राजनैतिक दलों से परामर्श कर कोई तर्कसम्मत फैसला लेना चाहिए, जिससे अनावश्यक विवाद खड़े न हों। अभी जिस तरह चुनाव से पहले चुनावी बश्नन्ड की बिक्री के लिए दिन बढ़ाने का फैसला लिया गया है, वह सीधे नीयत पर सवाल उठाता है। इससे भाजपा पर तो ...

हिमाचल प्रदेश और गुजरात चुनावों से ठीक पहले केंद्र की एनडीए सरकार ने एक चौंकाने वाला फैसला लेते हुए चुनावी बॉन्ड योजना–2018 में संशोधन किया है। वित्त मंत्रालय ने 7 नवंबर को एक अधिसूचना जारी कर बताया है कि विधानसभा चुनावों के वर्ष में बॉन्ड की ब्रिक्री के लिए 15 दिनों का अतिरिक्त समय देने के संशोधन को मंजूरी दी गई है। गौरतलब है कि 2017 में एनडीए सरकार ने चुनावी चंदे के लिए चुनावी बॉन्ड लाने का ऐलान किया था और 2018 में यह योजना लागू भी हो गई थी। इसके तहत साल में चार बार अप्रैल, जनवरी, जुलाई और अक्टूबर महीने के पहले दस दिनों तक चुनावी बॉन्ड खरीदने का नियम तय हुआ था। आम आदमी से लेकर बड़े उद्योगपति और व्यावसायिक घराने या कंपनियां चुनावी बॉन्ड स्टेट बैंक ऑफ इंडिया से खरीद सकते हैं। यह एक तरह का पैसे के रूप में वचन है जो आप किसी राजनैतिक दल को चंदे के रूप में देते हैं। इससे पहले राजनैतिक दलों को कोई व्यक्ति या औद्योगिक घराने जो भी चंदा देते थे, उसका खुलासा उन्हें करना पड़ता था और राजनैतिक दलों को भी घोषित करना पड़ता था कि उन्हें किससे, कितना चंदा मिला। लेकिन मोदी सरकार की चुनावी बॉन्ड योजना में बॉन्ड के खरीदार की पहचान जारी नहीं होती। सरकार का तर्क है कि यह चुनावी चंदे में पारदर्शिता को बढ़ावा देगा और लोगों को राजनैतिक दलों के दबाव से मुक्त रखेगा। हालांकि यह तर्क दिल के बहलाने के लिए ही काफी है। हम राजनीति का वह दौर देख रहे हैं, जब डिजीटल तकनीकी का इस्तेमाल लोगों की जासूसी के लिए हो रहा है। कब, कहां, किसके मोबाइल या कम्प्यूटर पर किसी सॉफ्टवेयर के जरिए निगरानी रखी जाएगी, कहा नहीं जा सकता। मामूली नजर आने वाली चिप से किसी व्यक्ति के बैंक खाते से लेकर उसके पहचान पत्र और पसंद, नापसंद, स्वास्थ्य की स्थिति और आवाजाही का पता क्षणों में लगाया जा सकता है। तब किस व्यक्ति या संस्था या कार्पोरेट घराने ने एसबीआई की किस शाखा से कितने का चुनावी बॉन्ड खरीदा और किस राजनैतिक दल ने उसे भुनाया, यह पता लगाना कोई कठिन बात नहीं है। इसलिए यह बात बेमानी है कि चुनावी बॉन्ड से किसी किस्म की पारदर्शिता आ रही है। बल्कि यह डर हमेशा बना रहेगा कि सत्ताधारी दल लोगों पर चुनावी बॉन्ड खरीदने का दबाव बनाए, ताकि उसका कोष भरता जाए। चुनावी बॉन्ड इन्हीं सब कारणों से विवादों में आए और इसके खिलाफ याचिका भी दायर हुई थीं। पिछले महीने ही एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफार्म्स यानी एडीआर की ओर से दायर याचिका पर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हुई थी, जिस पर एडीआर की ओर से बॉन्ड पर रोक की मांग करते हुए वरिष्ठ वकील प्रशांत भूषण ने कहा था कि इनका उपयोग शेल कंपनियां कालेधन को सफेद बनाने में कर रही हैं।

बॉन्ड कौन खरीद रहा है, इसकी जानकारी सिर्फ सरकार को होती है। चुनाव आयोग तक इससे जुड़ी कोई जानकारी नहीं ले सकता है। ये राजनीतिक दल को रिश्वत देने का एक तरीका है। जबकि केंद्र सरकार ने अपना पक्ष रखते हुए कहा था कि चुनावी बॉन्ड राजनीतिक चंदे का एक पारदर्शी तरीका है। इससे काला धन मिलना संभव नहीं है। सर्वोच्च अदालत ने इस मामले की विस्तार से सुनवाई के लिए 6 दिसंबर की तारीख तय की थी, मगर उससे पहले केंद्र सरकार ने एक नया संशोधन इसमें पेश कर दिया। 2018 में चुनावी बॉन्ड योजना जब लागू हुई थी, तो इसके मूल स्वरूप में प्रावधान था कि लोकसभा चुनाव वाले वर्ष में बॉन्ड बिक्री के लिए 30 अतिरिक्त दिन प्रदान किए जाएंगे, अब नए संशोधन में बिक्री के लिए 15 दिन और जोड़ दिए गए हैं। देश में लगभग हर साल किसी न किसी राज्य या केंद्र शासित प्रदेश में चुनाव होते ही हैं, तो नए संशोधन के मुताबिक हर साल इस बॉन्ड की बिक्री के लिए 15 दिन और बढ़ जाएंगे। निश्चित तौर पर यह फैसला भाजपा को फायदा पहुंचाने के मकसद से लिया गया दिख रहा है। अन्यथा ऐन चुनाव के पहले इस तरह का संशोधन नहीं किया जाता। यह ध्यान देने वाली बात है कि संशोधन 7 तारीख को हुआ और 9 तारीख से चुनावी बॉन्ड एक हफ्ते के लिए एसबीआई की शाखाओं में बिक्री के लिए उपलब्ध रहेंगे, ऐसी घोषणा भी सरकार ने कर दी। जबकि अभी हिमाचल प्रदेश और गुजरात दोनों राज्यों के लिए आचार संहिता लागू है। जिस फैसले को आचार संहिता के दौरान लिया गया और जो मुद्दा अदालत में विचाराधीन है, क्या उस पर कोई संशोधन सरकार को करना चाहिए, इन दोनों बिंदुओं पर अगर विचार करें तो इसमें सरासर चालाकी से की जा रही बेईमानी नजर आएगी। इसलिए इस फैसले पर सवाल उठने शुरु हो गए हैं। पूर्व केंद्रीय सचिव ई.ए.एस. सरमा ने इसे अनुचित कदम बताते हुए चुनाव आयोग से चुनावी बॉन्ड पर रोक लगाने की मांग की है। वहीं पूर्व चुनाव आयुक्त टी.एस. कृष्णमूर्ति ने सरकार के इस कदम का विरोध करते हुए सुझाव दिया है कि हमें एक राष्ट्रीय चुनाव कोष बनाकर चुनावों में सार्वजनिक फंडिंग करना चाहिए, जिसमें चंदे पर 100 फीसदी टैक्स छूट हो। ताकि चंदा देने वालों और राजनीतिक दलों के बीच कोई गठजोड़ न हो सके। सरकार अगर वाकई चुनावों में पारदर्शिता और ईमानदारी से वित्तप्रबंध करना चाहती है, तो उसे इस विषय के जानकार लोगों और अन्य राजनैतिक दलों से परामर्श कर कोई तर्कसम्मत फैसला लेना चाहिए, जिससे अनावश्यक विवाद खड़े न हों। अभी जिस तरह चुनाव से पहले चुनावी बॉन्ड की बिक्री के लिए दिन बढ़ाने का फैसला लिया गया है, वह सीधे नीयत पर सवाल उठाता है। इससे भाजपा पर तो उंगलियां उठ ही रही हैं, केंद्र सरकार की छवि भी दांव पर लग रही है, जो अच्छी बात नहीं है।

इस क्षेत्र और दुनिया भर में भारत की एक मजबूत राजनीतिक उपस्थिति है। इसके साथ भारत के पास दुनिया के लिए एक ज्यादा समावेशी, शांतिपूर्ण और सम्) भविष्य की मध्यस्थता करने हेतु अपने भारी राजनयिक रसूख का लाभ उठाने का अवसर है। साथ में उम्मीद है कि वन अर्थ. वन फैमिली. वन फ्यूचर की अपनी थीम और लोगो के साथ भारत जी–20 की अध्यक्षता से एक विलक्षण,...

भारत की जी–20 अध्यक्षता: उभरती अर्थव्यवस्थाओं के लिए एक बहुत ही बड़ा पल

अमिताभ कांत

भारत एक महीने से भी कम वक्त में, 1 दिसंबर को जी–20 की अध्यक्षता लेने जा रहा है। इस दौरान वो एक बहुत ही खघस स्थिति में है जहां वो दुनिया भर के विकासशील देशों की चिंताओं और वरीयताओं के हक में आवाज उठा सकता है। इंडोनेशिया–भारत–ब्राजील की जो जी–20 वाली तिकड़ी है, उसके केंद्र में भारत खड़ा है। इस प्रतिष्ठित अंतर–सरकारी मंच के 14 साल के इतिहास में उभरती अर्थव्यवस्थाओं के नेतृत्व में अपनी तरह की ये पहली तिकड़ी है। तकरीबन 1.4 अरब की आबादी के साथ, दुनिया की 5वीं सबसे बड़ी बढ़ती अर्थव्यवस्था के तौर पर भारत के पास गजब का आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक रसूख है, जिससे वो ग्लोबल नैरेटिव का प्रभावी ढंग से मार्गदर्शन कर सकता है ताकि आज की वास्तविकताओं का बेहतर ढंग से प्रतिनिधित्व कर सके।

जी–20 का पल भारत के लिए एक ऐसा मौका है जहां वो एक अंतरराष्ट्रीय एजेंडा निर्मित कर सकता है और उसे आगे बढ़ा सकता है। ये एजेंडा है – लाइफ (पर्यावरण के लिए लाइफस्टाइल), डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर, महिला सशक्तिकरण और तकनीक आधारित विकास पर गहरा ध्यान देते हुए समावेशी, न्यायसंगत और स्थायी विकास को आगे की ओर रखना।

हालांकि, तेजी से ध्रुवीकृत हो रही इस विश्व व्यवस्था में इन प्राथमिकताओं को उभारना कोई आसान काम नहीं है। जी–20 की भारतीय अध्यक्षता ऐसे समय पर आई है जब कुछ अन्य वैश्विक चिंताओं का ग्रहण लगा हुआ है। ये चिंताएं रूस और यूक्रेन युद्ध के दुष्परिणामों और व्यापक आर्थिक मंदी से लेकर विकासशील देशों को प्रभावित करने वाले गंभीर ऋण संकट तक जाती हैं। संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) की पृष्ठभूमि में देखें तो कोविड–19 महामारी के कारण तात्कालिक आपदा शमन प्रयासों से दशकों की विकास संबंधी प्रगति में भारी बाधा पड़ी है। ऐसे में सतत विकास को लेकर भारत का विजन ही इस वक्त की जरूरत है, जो कि वैश्विक अंतर्संबंधों, साझा जिम्मेदारी और एक सर्कुलर इकोनॉमी में निहित है। इस मिशन को उभारने के लिए भारत जी–20 की अपनी अध्यक्षता की थीम के तौर पर वसुधैव कुटुम्बकम या एक धरती, एक परिवार, एक भविष्य को अपना रहा है। एक प्राचीन संस्कृत पुस्तक महाउपनिषद् से ली गई ये फिलॉसफी 2014 में भारत की डिप्लोमैटिक विश्वदृष्टि में दिखती है, जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संयुक्त राष्ट्र महासभा के अपने ऐतिहासिक संबोधन में विश्व परिवार की बात की थी। उस समय प्रधानमंत्री जी–4 गठबंधन के लिए एक बड़ी भूमिका का आह्वान कर रहे थे, और वे इस नीति को निल बटे सन्नाटा के तौर पर न देखने की जरूरत पर बल दे रहे थे। आज, ये संदेश पहले से कहीं ज्यादा प्रासंगिक बना हुआ है। क्योंकि मानवता आज तक के अपने सबसे बड़े अस्तित्व के खतरे से जूझ रही है। वो है – जलवायु परिवर्तन का विनाशकारी व्यापक असर। भारत को उम्मीद है कि अपनी थीम से वो दुनिया भर के नेताओं और वैश्विक नागरिकों को ये याद दिलाएगा कि सबसे छोटे सूक्ष्मजीव से लेकर सबसे बड़े सभ्यागत इकोसिस्टम तक, जीवन के तमाम रूप परस्पर जुड़े हुए हैं। और ये कि कैसे ये साझा भविष्य, एक बराबर जिम्मेदारी और व्यक्तिगत हस्तक्षेप को जन्म देता है।

भारत का जी–20 वाला लोगो ऐसी ही फिलॉसफी की बात करता है। कमल, जो कि देश का राष्ट्रीय फूल है और विपत्तियों के बीच भी विकास का प्रतीक है, उसमें बैठी पृथ्वी की छवि, दरअसल जीवन को लेकर भारत की प्रो–प्लैनेट अप्रोच की बात करती है। इसके लोगो में केसरिया, सफेद और हरे रंग का शानदार मिश्रण दरअसल विविधता और समावेश के सिद्धांतों को दर्शाता है जो कि उसके सांस्कृतिक लोकाचार को रेखांकित करता है। भारत लंबे समय से सार्वभौमिक सद्भाव और सहयोग का वाहक रहा है और आगे भी रहेगा। लाइफ (पर्यावरण के लिए लाइफस्टाइल) की अवधारणा इन सिद्धांतों के साथ निकटता से जुड़ी हुई है। नवंबर 2021 में ग्लासगो में सीओपी–26 में प्रधानमंत्री ने इसका परिचय कराया था। पिछले महीने, इस मिशन को संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेज की उपस्थिति में आधिकारिक तौर पर प्रधानमंत्री द्वारा गुजरात की स्टैच्यू ऑफ यूनिटी पर इसे लॉन्च किया गया था।

प्रधानमंत्री ने अपने भाषण में कहा कि कुल मिलाकर इस आंदोलन का मकसद जलवायु परिवर्तन के खिलाफ लड़ाई को लोकतांत्रिक बनाना है जिसमें हर कोई अपनी क्षमता के अनुसार योगदान दे सकता है। सामाजिक और व्यक्तिगत दोनों स्तरों पर, खपत और उत्पादन के पैटर्न में बदलाव को ध्यान में रखते हुए, लाइफ से उम्मीद है कि वो दुनिया भर में बड़े पैमाने पर पर्यावरण के लिहाज से टिकाऊ प्रथाओं को प्रोत्साहित करेगा। जी–20 की अध्यक्षता में भारत को अपने सामंजस्यपूर्ण दर्शन और प्राचीन सभ्यता संबंधी उन परंपराओं को दिखाने का मौका मिलेगा जिन्होंने पीढियों–पीढियों से पृथ्वी के साथ अपने समग्र संबंध को कायम रखा है। टिकाऊ प्रथाओं का समृद्ध इतिहास भारत को एक ऐसे विशिष्ट स्थान पर रखता है जहां वो जलवायु और विकास एजेंडे को एकीकृत करने के बारे में बात कर सके।

डिजिटल मोर्चे की बात करें तो भारत मिसाल कायम करते हुए नेतृत्व करने को तैयार है। इसकी डिजिटल कामयाबी की कहानी खुद–ब–खुद बोलती है। टेक्नोलॉजी प्रेरित समाधानों के लिए मानव–केंद्रित दृष्टिकोण में उसका बुनियादी भरोसा, कई प्रमुख क्षेत्रों पर ज्यादा बड़ा ध्यान दिला सकता है। ये प्रमुख क्षेत्र हैं – पब्लिक डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर, वित्तीय समावेशन और कृषि से लेकर शिक्षा तक टेक्नोलॉजी युक्त विकास। भारत एक ऐसा देश है जहां रियल टाइम डिजिटल लेनदेनों की दुनिया में सबसे बड़ी संख्या (2022 तक 48 बिलियन) है, और जो सबसे बड़ी बायोमेट्रिक आईडी सिस्टम (आधार) का घर है। वो डिजिटल वित्तीय समावेशन, डिजिटल पहचान और सहमति आधारित ढांचों के इर्द गिर्द बातचीत को आकार देने के लिए एक महत्वपूर्ण स्थिति में है। इसके अलावा, भारत अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों में भी नतीजे देने के लिए प्रतिबद्ध है। इनमें महिला सशक्तिकरण, 2030 एसडीजी की दिशा में तेजी से प्रगति, कई क्षेत्रों में तकनीक आधारित विकास, हरित हाइड्रोजन, आपदा जोखिम में कमी, खाद्य सुरक्षा और पोषण को बढ़ाना, और बहुपक्षीय सुधार आदि शामिल है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने घोषणा की है कि ऋण संकट भारत की जी–20 मुद्दों की सूची में शुमार होगा, ऐसे में ये स्पष्ट है कि ये मुल्क ग्लोबल साउथ के हितों के लिए एक प्रभावी झरोखा बनने को तैयार है और वो विकसित दुनिया की अलग–थलग चिंताओं को व्यापक एजेंडे पर हावी होने नहीं देगा।

यह जिंदगी न मिलेगी दोबारा थीम पर बच्चे बोले सिर सलामत, जीवन सलामत

श्री डाल सिंह मेमोरियल स्कूल में यातायात माह को लेकर आयोजित गोष्ठी

हरदोई ।यातायात पुलिस द्वारा चलाए जा रहे यातायत नवंबर माह के अंतर्गत मंगली पुरवा स्थित श्री डाल सिंह मेमोरियल स्कूल में यातायात जागरूकता विषय पर एक संगोष्ठी व पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें बच्चों ने यह जिंदगी न मिलेगी दोबारा थीम पर यातायात के संकेत चिन्ह वह उनके अर्थ विषय पर पोस्टर बनाएं बच्चों के द्वारा बनाए गए । पोस्टर में बच्चों के द्वारा बड़ों से शराब पीकर गाड़ी न चलाने, बाइक चलाते समय हेलमेट लगाने ,ईयर फोन का प्रयोग न करने, मोबाइल से बात करते समय वाहन न चलाने, वाहन की गति सीमा निर्धारित सीमा से अधिक न चलाने की आदि की अपील की गई। बच्चे बोले श सर सलामत, जीवन सलामतश के लिए हेलमेट जरूर लगाएं। इस मौके पर टीआई अनिल कुमार यादव तथा एआरटीओ संजीव कुमार सिंह द्वारा यातायात नियमों का पालन न करने से बढ़ रही सड़क दुर्घटनाओं के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए कहा गया कि सभी लोग स्वयं यातायात नियमों का पालन करते हुए दूसरों को भी जागरूक करें इस मौके पर छात्रा अर्पिता सिंह, कृतिका प्रजापति, अंजली सिंह, आस्था गुप्ता ,तान्या मिश्रा,दीक्षा के द्वारा यातायात नियमों का पालन करने के लिए एक गीत भी प्रस्तुत किया गया। विद्यालय प्रबंधक अखिलेश सिंह ने बच्चों से अपील करते हुए कहा कि वह स्वयं यातायात के नियमों का पालन करें तथा अपने अभिभावकों को भी जागरूक करें कि जब भी वह दोपहिया अथवा चार पहिया वाहन चलाएं तो सभी ट्रैफिक रूल्स का पालन करते हुए वाहन चलाएं। इस मौके पर पोस्टर प्रतियोगिता में प्रतिभाग करने वाले बच्चों में प्रथम द्वितीय तथा तृतीय स्थान पर रहने वाले बच्चों को पुरस्कार देकर उनका हौसला अफजाई किया गया। इस मौके पर विद्यालय के उप प्रबंधक मुकेश सिंह के अलावा प्रधानाचार्य लक्ष्मी देवी, शिक्षिका कविता गुप्ता, अर्पिता सिंह,प्रियांशी आनंद ,मीनाक्षी यादव,विनीता शुक्ला ,बीना गुप्ता, रूपाली गुप्ता, आरती मिश्रा, रेखा रानी, सोनम शुक्ला, नीलम राठौर, प्रज्ञा तिवारी, पूनम सिंह, पूजा सिंह, सोनी तिवारी, राम प्रकाश पांडे ,देवेश सिंह, भूपेश सिंह सहित सभी शिक्षक शिक्षिकाएं लगभग 5 सैकड़ा बच्चे मौजूद रहे।

आम की फसल को सम–सामयिक हानिकारक कीटों से बचाने हेतु उचित प्रबन्धन करें

हरदोई ।जिला उद्यान अधिकारी ने बताया है कि आम की अच्छी उत्पादकता सुनिश्चित करने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक है कि आम की फसल को सम–सामयिक हानिकारक कीटों से बचाने हेतु उचित समय पर प्रबन्धन किया जाय। माह नवम्बर एवं दिसम्बर अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं, इस माह में गुजिया एवं मिज कीट का प्रकोप प्रारम्भ होता है जिससे फसल को काफी क्षति पहुचती है। अतएव उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण विभाग, उ0प्र0 द्वारा बागवानों को कीट के प्रकार एवं प्रकोप के नियंत्रण हेतु सलाह दी जाती है, गुजिया कीट के शिशु जमीन से निकल कर पेड़ों पर चढ़ते हैं और मुलायम पत्तियों, मंजरियों एवं फलों से रस चूसकर क्षति पहुँचाते हैं। इसके शिशु कीट 1–2 मिमी0 लम्बे एवं हल्के गुलाबी रंग के चपटे तथा मादा वयस्क कीट सफेद रंग के पंखहीन एवं चपटे होते हैं। इस कीट के नियंत्रण के लिए बागों की गहरी जुताईध गुड़ाई की जाय तथा शिशु कीट को पेड़ों पर चढ़ने से रोकने के लिए माह नवम्बर–दिसम्बर में आम के पेड़ के मुख्य तने पर भूमि से 50–60 से0मी0 की ऊंचाई पर 400 गेज की पालीथीन शीट की 50 सेमी चौड़ी पट्टी को तने के चारों ओर लपेट कर ऊपर व नीचे सुतली से बांध कर पॉलीथीन शीट के ऊपरी व निचली हिस्से पर ग्रीस लगा देना चाहिए जिससे कीट पेड़ों के ऊपर न चढ़ सके। इसके अतिरिक्त शिशुओं को जमीन पर मारने के लिए दिसम्बर के अंतिम या जनवरी के प्रथम सप्ताह से 15–15 दिन के अन्तर पर दो बार क्लोरीपाइरीफॉस (1.5 प्रतिशत) चूर्ण 250 ग्राम प्रति पेड़ के हिसाब से तने के चारों ओर बुरकाव करना चाहिए। अधिक प्रकोप की स्थिति में यदि कीट पेड़ों . पर चढ़ जाते हैं तो ऐसी दशा में मोनोक्रोटोफॉस 36 ई०सी० 1.0 मिली० अथवा डायमेथोएट 30 ई०सी० 2.0 मि0ली0 दवा को प्रति ली० पानी में घोल बनाकर आवश्यकतानुसार छिड़काव करें। उन्होंने बताया है कि आम के बौर में लगने वाले मिंज कीट मंजरियों, तुरन्त बने फूलों एवं फलों तथा मुलायम कोपलों में अण्डे देती है, जिसकी सूड़ी अन्दर ही अन्दर खाकर क्षति पहुंचाती है। इस बाद में कीट के नियंत्रण के लिए यह आवश्यक है कि बागों की जुताईध्गुड़ाई की जाय तथा समय से कीटनाशक दवाओं का छिड़काव करना चाहिए। इसके लिए फेनिट्रोथियान 50 ई०सी० 1.0 मि0ली0 अथवा डायजिनान 20 ई0सी0 2.0 मि0ली0 अथवा डायमेथोएट 30 ई0सी0 1.5 मि0ली0 दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर बौर निकलने की अवस्था पर एक छिड़काव करने की सलाह दी जाती है।

बढ़ने लगा ठंड का असर, धूप की तपिश भी कम

जौनपुर । नवंबर महीने की शुरुआत के बाद ही ठंड का असर बढने लगा है। न्यूनतम तापमान कम होना लगा है। ध ूप की तपिश भी कम होने लगी है। ठंड के कारण सर्दी–जुकाम के मरीजों की संख्या धीरे–धीरे बढने लगी है। मौसम में हो रहे बदलाव के कारण जुकाम, खांसी, बुखार के मरीज बढ़ने लगे हैं। नवंबर महीने की शुरुआत के साथ ही जहां सर्दी का मौसम शुरू होने लगा है।दिन में मौसम गर्म होता है। लेकिन सुबह और रात में पहनावे पर लोग ध्यान नहीं रख रहे हैं। दिन में लोग घर से कम कपड़े पहनकर निकलते हैं और शाम को घर पहुंचते–पहुंचते मौसम ठंडा हो जाता है। मौसम बदलने के साथ सर्दी, जुकाम, खांसी, गले में दर्द, सिरदर्द, शरीर में दर्द, तेज बुखार हो रहा है। वायरल बुखार तेजी से फैल रहा है। जांच में डेंगू के मरीज भी मिल रहे हैं। शहर के अलावा ग्रामीण क्षेत्रों से उल्टी–दस्त और बुखार के मरीज भी बड़ी संख्या में आ रहे हैं। मौसम परिवर्तन के साथ ही मौसमी बीमारियों के मरीज बढ़ने लगे हैं। बुखार, सर्दी, जुकाम–के मरीज इलाज पहुंच रहे हैं। अस्थमा के मरीज के लिए तो सबसे अधिक सावधानी बरतने की जरूरत है। अस्थमा के मरीज को अपनी दवा हमेशा अपने पास रखनी चाहिए। मौसम के करवट लेते ही बच्चे सबसे अधिक प्रभावित होते हैं क्योंकि बच्चों का शरीर परिवर्तन को जल्दी स्वीकार नहीं कर सकता है। बच्चों को गर्म कपड़ों में रखना शुरू कर दें। सर्दी जुकाम होने से तुरंत डॉक्टर से कंसल्ट करना चाहिए। त्वचाका रखें ख्याल रू सर्दीशुरू होते ही शरीर से पसीना आना बंद हो जाता है। इससे त्वचा में खिंचाव जाता है। जिसे त्वचा फटनी भी शुरू हो जाती है। ब्यूटी एक्सपर्ट बताती हैं कि सर्दी में त्वचा पर अधिक ध्यान देने की जरूरत है। इस मौसम में नहाते समय साबुन का इस्तेमाल भी देखकर करें। अधिक कास्टिक वाली साबुन का इस्तेमाल करें। साथ ही मॉस्चराइजर का भी जरूर इस्तेमाल करना चाहिए। खाने–पीनेका रखें ख्याल रू इसमौसम में यदि आपके खाने–पीने का चार्ट बिगड़ा तो इससे आपकी सेहत तो बिगड़ेगी ही। साथ ही आपकी फिगर पर भी बुरा असर पड़ सकता है बॉडी एक्सपर्ट सर्दी के मौसम में रोजाना सैर एक्सरसाइज को रेगुलर रखने की जरूरत बताई।

प्लेटफॉर्मों को गड्ढा मुक्त बनाया: रमेश चंद्र रत्न

जौनपुर । भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी जनपद शाखा द्वारा मातापुर लाइन बाजार स्थित नवनिर्मित रेड क्रॉस भवन पर पीएससी रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष रमेश चंद्र रत्न का भव्य स्वागत समारोह आयोजित किया गया । सर्वप्रथम रेडक्रास के पदाधिकारिय द्वारा मुख्य अतिथि को बुके देकर और माल्यार्पण करके स्वागत किया गया। मुख्य अतिथि ने अपने उद्बोधन में बताया की अध यक्ष बनने के पश्चात सर्वप्रथम उन्होंने सभी प्लेटफॉर्मों को गड्ढा मुक्त बनाने का कार्य किया । प्लेटफार्म पर बिकने वाले अश्लील साहित्य को बंद करा दिया । पानी की शुद्धता पर कार्य किया साथ ही साथ उन्होंने रेडक्रास के पदाधिकारियों को भी यह विश्वास दिलाया कि यदि उनकी कहीं आवश्यकता है तो वह हर संभव मदद के लिए तैयार हैं । रेड क्रॉस सोसाइटी के सभापति डॉ0 आर के सिंह ने जौनपुर में रेलवे के संसाधनों को बढ़ाने का निवेदन किया जिससे जनपद विकास की ओर अग्रसर हो सके। सचिव डॉ0 मनोज वत्स ने बताया कि संस्था के पदाधिकारियों और सामाजिक लोगों की मदद के द्वारा एक बड़े रेड क्रॉस भवन का निर्माण किया गया ।साथ ही साथ एटीएम हेल्थ मशीन लगाने का कार्य किया गया है । जल्द ही जिसके उद्घाटन का कार्य किया जाएगा उन्होंने मुख्य अतिथि से शटल एक्सप्रेस में एसी चेयर कार का एक डिब्बा और बढ़ाने का भी निवेदन किया । सदस्य रेल व नागरिक उड्डयन मंत्रालय शिशिर सिंह ने रेड क्रॉस भवन की भूमि पर ब्लड बैंक के लिए हाल बनवाने की बात कही । शिशिर सिंह द्वारा मुख्य अतिथि को शाल और स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। लाल जी चौधरी एडीआरएम वाराणसी, प्रतीक श्रीवास्तव डीसीएम लखनऊ, ए एन यादव ,अतुल सिंह ,शशिकांत सिंह, विनोद मौर्या ,राघवेंद्र सिंह, डॉ विमला सिंह ,उर्वशी सिंह ,हिमांशु, अवनीश ,शिव नारायण सिंह ,डॉ0 विवेक श्रीवास्तव ,संदीप सिन्हा ,नितिन चौरसिया ,डॉ हरिशंकर सिंह आदि उपस्थित रहे। संचालन रेड क्रॉस सोसाइटी के कोषाध्यक्ष डॉ0 संदीप पांडेय ने किया तथा रवि सिंह ने आभार व्यक्त किया।

बन्दियों को योग कराया

जौनपुर । अधीक्षक जिला कारागार ने अवगत कराना है कि जिला कारागार जौनपुर में छः दिवसीय योग शिविर का प्रशिक्षण चल रहा है। पतंजली योग पीठ जिला इकाई के प्रशिक्षक डा० ध्रुवराज द्वारा जेल के अधिकारियोध्कर्मचारियों व बन्दियों को योग कराया जा रहा है। कार्तिक पुर्णिमा गुरूनानक जयन्ती के पावन पर्व पर कारागार के अधिकारियों व योग प्रशिक्षण द्वारा बन्दियों को गुरूनाक देव के विषय में बताया गया।

अब बन्दियों से रविवार को मुलाकात नही

जौनपु र। अधीक्षक जिला कारागार ने अवगत कराना है कि नये जेल मैनुअल के अनुसार कारागार में निरूद्ध बन्दियो से मुलाकात करने हेतु नये नियम के अनुसार रविवार व जेल मैनुअल में उल्लेखित जेल के अवकाशों को छोड़कर प्रतिदिन मुलाकात करायी जायेगी। पूर्व में रविवार को होने वाली मुलाकात अब नये नियम के अनुसार शनिवार को करायी जायेगी। रविवार को कोई मुलाकात नही होगी।

नियमित टीकाकरण को जोर देने के लिए की बैठक

जौनपुर। नियमित टीकाकरण कार्यक्रम अंतर्गत टीकाकरण से वंचित वैब (वैक्सीन अवॉइडेंस बिहैवियर) झिझक व उदासीन परिवारों को मोबिलाइज कर टीकाकरण कराने के हेतु एवं प्रभावशाली सहयोगी बैठक का आयोजन . सुबह क्षेत्र स्थित गुरैनी बाजार में किया गया। जिसमें अवध ेश कुमार तिवारी बी.एम.सी.एस एम नेट यूनिसेफ के द्वारा टीकाकरण से 12 जानलेवा बीमारियों से बचने जैसे टी.वी, हेपेटाइटिस बी, पोलियो, काली खांसी, डिप्थीरिया, टिटनेस, हिब इंफेक्शन, निमोनिया, दस्त ,खसरा व रूबेला और दिमागी बुखार से बचने के बारे में विस्तृत जानकारी दिया गया। इसके साथ ही साथ नियमित टीकाकरण न कराने व इसके दुष्प्रभाव से बच्चे उक्त बीमारियों के शिकार हो सकते हैं। टीकाकरण से झिझक उदासीन परिवारों का नाम भी साझा किया गया तथा लोगों से सहयोग की अपील किया गया।

तेज गति से आ रही पिकअप ने मोटरसाइकिल को मारी जोरदार टक्कर, बिटिया की शादी का कार्ड बांटने जा रहे पिता की दर्दनाक मौत

हरदोई। लखनऊ–हरदोई मार्ग पर कटियामऊ मोड़ पर मोटरसाइकिल सवार की पिकअप की टक्कर से दर्दनाक मृत्यु हो गई। इस घटना से परिवार में कोहराम मच गया। बताते चलें कि जगदीश प्रसाद शर्मा पुत्र राम औतार शर्मा उम्र 55 वर्ष निवासी जवाहर नगर हैदराबाद जिला उन्नाव थाना आसीवन अपने दामाद मुनेंद्र शर्मा पुत्र राम शंकर शर्मा के साथ मोटरसाइकिल से .बिटिया की शादी का कार्ड बांटने कछौना आ रहे थे। कोतवाली कछौना के कटियामऊ मोड़ पर हरदोई की तरफ से तेज गति से आ रहे पिकप डाक पार्सल न्च32स्छ4599 ने सामने आकर विपरीत दिशा में टक्कर मार दी। इस घटना से जगदीश प्रसाद शर्मा को गंभीर चोटें आई। स्थानीय लोगों की सूचना पर एंबुलेंस कर्मी संदीप गुप्ता पहुंचकर घायल को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र कछौना में भर्ती कराया जहां पर डॉक्टर ने जगदीश प्रसाद शर्मा को मृत घोषित कर दिया। मृतक की पुत्री की शादी 25 नवंबर को तय थी। पुत्री की शादी सौरभ पुत्र श्रीकृष्ण निवासी तलौली बेहंदर से होनी है। इस घटना से परिजनों पर दुख का पहाड़ टूट पड़ा। चालक दामाद बाल–बाल बच गया। तेज गति व यातायात नियमों की अनदेखी के चलते सड़क दुर्घटनाओं पर अंकुश नहीं लग पा रहा है, जिसकी भारी भरकम कीमत लोगों को अपनी जान गवांकर उठानी पड़ रही है।

हमें तुमसे हुई प्रीति श्याम प्यारे, बरसोहिया गांव में खाटू श्याम का जागरण

हरदोई। कटियारी क्षेत्र के बरसोहिया गांव में रात खाटू श्याम के जागरण का भव्य आयोजन किया गया। जिसमें आए गायक कलाकारों ने खाटू श्याम के भजनों को गाकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध ा कर दिय। दिल्ली से आए गायक कलाकार साहिल सावरा ने गाया हमें तुमसे हुई प्रीति श्याम प्यारे,तुम हो हमारे हम है तुम्हारे। कैसे रिझाऊँ तुझको मैं कैसे मनाऊँ भावना है ।सच्ची मेरीभाव से मैं ध्याऊँ भाव के हो भुखे बाबाभाव से पुकारे तुम हो हमारे हम है। तुम्हारे। बरेली से आए शिया गुप्ता ने गायाअगर श्याम तेरी किरपा ना होती, गरीबों को दुनिया जीने ना देती ।दर दर की ठोकर खाते सुदामा अगर श्याम होता न तेरा ठिकाना, जरा सोचो उनकी दशा कैसी होती। गरीबों को दुनिया जीने ना देती ।अगर श्याम तेरी कृ पा ना होती गरीबों को दुनिया जीने ना देती है। शाहजहांपुर से आए मयंक अग्रवाल ने गाया मेरा बाबा रंग रंगीला मैं तो नाचूंगी मेरा बाबा बड़ा सजीला,मैं तो नाचूंगी। दर तेरे आके ज्योत जलाकेसबको बुलाके हाथ उठाके मैं तो नाचूंगी हाँ मैं तो नाचूंगी ।मेरा बाबा रंग रंगीला मैं तो नाचूंगी। इस मौके पर बच्चा बाबा, ओमप्रकाश सिंह, भुवनेश मिश्रा, श्याम सिंह चौहान, श्याम कृ पा मंडल के अध्यक्ष गांधी मिश्रा,दीपक मिश्रा, गोविंद गुप्ता, सुमित गुप्ता अर्पित दीक्षित, नारायण मिश्रा मौजूद रहे हैं।

मतदारता पंजीकरण अभियान शुरू

जौनपुर । विधानसभा निर्वाचक नामावली का विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण के अन्तर्गत मतदाता पंजीकरण कार्यक्रम का शुभारंभ बीआरपी इन्टर कालेज में आयोजित हुआ। ये कार्यक्रम 9 नवम्बर से 8 दिसम्बर तक चलेगा। अपर जिलाधिकारी भू0रा0 रजनीश राय व उप जिलाधिकारी सदर सुनील कुमार ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। प्रधानाचार्य डा0 सुबाष चन्द्र सिंह ने अतिथियों का स्वागत किया। कालेज की छात्राओं ने स्वागत गीत व मतदाता जागरूकता गीत प्रस्तुत किया तथा कालेज के छात्र छात्राओं ने रंगोली प्रतियोगिता के माध्यम से आकर्षक रंगोली सजाकर मतदाताओं को जागरूक व प्रेरित किया। छात्रा साक्षी यादव ने मतदाताओ को जागरूक करने हेतु अपने सम्बोधन से लोगों को आकर्षित किया। मतदाता सूची का आलेख्य प्रकाशन पदाभिहित स्थलों, निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधि ाकारी कार्यालय एवं जिला निर्वाचन अधिकारी कार्यालय पर किया गया। प्रकाशित अवधि में मतदाता सूची निरीक्षण हेतु निःशुल्क उपलब्ध रहेगी। सीआरओ रजनीश राय ने कहा कि आज से बूथ लेविल आफिसर द्वारा घर–घर जाकर 1 जनवरी 2023 को 18 वर्ष आयु पूर्ण करने वाले या छूटे हुए मतदाताओं के नाम सम्मिलित करने हेतु फार्म 6 व मृतक, डबल, शिफ्टेड मतदाताओं के नाम अपमार्जित किये जाने हेतु फार्म 7 तथा किसी नाम में त्रुटि होने पर शुद्ध किये जाने, स्थान परिवर्तन तथा पहचान पत्र खोनेध्नष्ट होने के कारण दोबारा बनवाये जाने हेतु फार्म 8 पर दावाध्आपत्ति प्राप्त करेगें। बीएलओ द्वारा उक्त के अतिरिक्त निर्वाचक नामावली में विद्यमान मतदाताओं के स्वैच्छिक रूप से आधार नम्बर फार्म–6बी पर प्राप्त करते रहेंगे।

आयोग द्वारा दिनांक 12, 20, 26 नवम्बर व 4 दिसम्बर 2022 को विशेष अभियान चलाया जायेगा जिसमें बीएलओ अपने अपने बूथों पर 10 बजे से 4 बजे तक उपस्थित रहकर दावा आपत्ति प्राप्त करेगें। उप जिलाधिकारी सदर सुनील कुमार ने लोगों से अपील करते हुए कहा कि मतदाता सूची में नाम जोड़ने, अपमार्जित एवं संशोधित करने हेतु अपने बीएलओ से सम्पर्क करे या आनलाइन एनवीएसपी, वोटर पोर्टल या वोटर हेल्पलाइन ऐप के माध्यम से आनलाइन आवेदन कर सकते है। संचालन स्वीप कोआर्डिनेटर सैय्यद मोहम्मद मुस्तफा ने किया। प्रभारी सहायक जिला निर्वाचन अधिकारी बृजेश चतुर्वेदी, कालेज के शिक्षक रिषी श्रीवास्तव, प्रकाश यादव, अजीत कुमार, डा धर्मेन्द्र यादव, डा0 विमल श्रीवास्तव, अखिलेश श्रीवास्तव, पंचलाल राजीव श्रीवास्तव सहित छात्र–छात्राएं उपस्थित रही।

विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण की तिथियां तय

जौनपुर । उप जिला निर्वाचन अधिकारी ने बताया है कि भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार अर्हता तिथि 01. 01.2023 के आधार पर निर्वाचन नामावलियों का विशेष संक्षिप्त पनुरीक्षण कराने का कार्यक्रम जारी कर दिया गया है। उन्होंने बताया कि निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार दिनांक 09 नवम्बर 2022 को विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों की निर्वाचक नामावलियों का आलेख्य प्रकाशन, दिनांक 09 नवम्बर से दिनांक 08 दिसम्बर 2022 तक दावे और आपत्तियां प्राप्त करने की अवधि एवं दिनांक 12 नवम्बर, 20 नवम्बर, 26 नवम्बर 2022 व 04 दिसम्बर 2023 को विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण हेतु विशेष अभियान तिथियां निर्धारित की गयी है। दिनांक 26 दिसम्बर 2022 तक दावे और आपत्तियों का निस्तारण करते हुए दिनांक 05 जनवरी 2023 को निर्वाचक नामावलियों का अन्तिम प्रकाशन करा दिया जायेगा।

बन्दियों को मौलिक अधिकारों के बारे में जानकारी दिया

जौनपुर । जनपद न्यायाध ीशध्अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण जौनपुर श्रीमती वाणी रंजन अग्रवाल के निर्देशन में सचिव विवेक विक्रम द्वारा ''जिला कारागार में भौतिक निरीक्षण कर जागरूकताध साक्षरता शिविर का आयोजन किया गया। सचिव पूर्णकालिक, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण विवेक विक्रम द्वारा राष्ट्रीयध्राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण की विभिन्न योजनाओंध्परियोजनाओं की जानकारी देते हुए प्राधिकरण की संरचना, इसके उद्देश्य व कार्यो को बताया गया। बन्दियों को विधिक एवं मौलिक अधिकारों की पूर्वक जानकारी दी गयी। ऐसे विचाराधीन बन्दी जो अपने वादों में पैरवी हेतु अधिवक्ता करने में अक्षम है तथा ऐसे सिद्धदोष बन्दी जो अपने मामलों में उच्च न्यायालय में अपील करने में अक्षम हों वह कारागार अधीक्षक के माध्यम से अपने प्रार्थना पत्र जिला विधिक सेवा प्राधिकरण में प्रस्तुत कर निःशुल्क अधिवक्ता प्राप्त कर सकते हैं। कैदियों के नाबालिक होने की संभावना को देखते हुए जन्म प्रमाण पत्र मंगवाने की सलाह दी गयी। समयपूर्व रिहाई के पात्र बन्दियों को चिन्हित कर उनके प्रार्थना पत्र तैयार कर नियमानुसार अग्रिम कार्यवाही हेतु प्रेषित किये जाने हेतु निर्देशित किया गया।इनके अतिरिक्त संचालित अभियान के अन्तर्गत प्रत्येक बन्दी को कानूनी हक की जानकारी दी जानी है। बन्दी के परिजनों की स्थिति, बन्दी की बीमारी, परिजनों व बच्चों की बीमारी, बच्चों की पढ़ाई के बारे में जानकारी एकत्र कर फार्म भरवाये जा रहे हैं। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से गठित टीम नं0 02 में अधिवक्तागण अमित कुमार त्रिपाठी, विजय पाल, अम्बरीष श्रीवास्तव, मीरा सिंह व पी0एल0वी0 गण अकरम अली, अशोक कुमार, शिवशंकर, शोभना स्मृति ने एक–एक बन्दी से जानकारी एकत्र कर फार्म भरवाने के बाद बन्दियों की डाटा फिडिंग का कार्य तेजी से किया जा रहा है।

सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, के निर्देशन में ''विधिक सेवा दिवस'' के अवसर पर तहसील बदलापुर जौनपुर में विधिक साक्षरताध्जागरूकता शिविर का आयोजन कर तहसीलदार बदलापुर राकेश कुमार, द्वारा उपस्थित जनसामान्य को केन्द्रध्राज्य सरकार द्वारा संचालित योजनाओं के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी प्रदान करायी गयी तथा जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा संचालित समस्त योजनाओं के बारे में एवं आगामी 12 नवम्बर को आयोजित होने वाली राष्ट्रीय लोक अदालत के बारे में जानकारी प्रदान करायी गयी। इस अवसर पर एस0डी0एम0 बदलापुर डा0 प्रदीप कुमार, नायब तहसीलदार अतुल सिंह, नायब नाजिर श्री हमीद अहमद व अन्य उपस्थित रहे। विधिक सेवा दिवस के अवसर पर तहसील सभागार केराकत में स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के बारे में जानकारी प्रदान कराने हेतु निःशुल्क हेल्थ कैम्प लगाकर उपस्थित जनमानस के शुगर एवं बी0पी0 की जॉच कर लोगों को होने वाले रोगों के बारे में बचाव हेतु जानकारी प्रदान करायी गयी। शिविर में तहसीलदार केराकत अमित त्रिपाठी, नायब तहसीलदार वीरेन्द्र यादव, डा0 राजेन्द्र कुमार, कृष्ण कुमार फर्मासिस्ट, सूर्यप्रकाश (एल0टी0), पैनल अधि वक्ता देवेन्द्र कुमार यादव व अन्य उपस्थित रहे।

8 दिसंबर तक चलेगा मतदाता पुनरीक्षण कार्य

हरदोई ।उपजिलाधिकारी सदर स्वाती शुक्ला ने बताया है कि एक माह तक चलने वाले विशेष मतदाता पुनरीक्षण अभियान के तहत आज राणा प्रताप महाविद्यालय में छात्र–छात्राओं को जागरूक किया गया। उन्होंने बताया कि मतदाता पुनरीक्षण कार्य आज से लेकर 8 दिसंबर तक चलेगा। इसके अंतर्गत उन मतदाताओं का नाम भी जोड़ा जाएगा जो 1 जनवरी 2023 को 18 वर्ष की आयु पूरी कर चुके हैं। उन्होंने उपस्थित छात्र–छात्राओं से कहा कि आवश्यक दस्तावेजों के साथ निर्धारित प्रारूप पर फॉर्म भरकर मतदाता सूची में अपना नाम अवश्य दर्ज कराएं। अभियान के दौरान बीएलओ क्षेत्र में जाकर मतदाता सूची में संशोधन का कार्य करेंगे। इस अवसर पर तहसीलदार सदर प्रतीत त्रिपाठी व कॉलेज के शिक्षकगण व विद्यार्थी उपस्थित रहे।

गम्भीर डेंगू रोगियों हेतु जिला अस्पताल मे किये गये बेड आरक्षित

हरदोई ।जिला मलेरिया अधिकारी की टीम द्वारा 115 एलाईजा जांच के सापेक्ष पाये गये डेंगू केसेज (कुल 12) के सापेक्ष आजाद नगर, न्यू सिविल लाईन, वेट गंज, सुभाष नगर, नवीपुरवा आदि क्षेत्रों का भ्रमण कर सोर्स रिडक्सन एवं मच्छर रोधी औषधि का छिडकाव कार्य सम्पादित किया गया। इस कार्यवाही में कुल 640 घरों में भ्रमण कर सोर्स रिडक्सन का कार्य सम्पादित किया गया। जिनमें से 7 घरों के अन्दर मच्छर का लार्वा पाये जाने पर भवन मालिकों को चेतावनी नोटिस जारी किया गया। इसके अतिरिक्त मलेरिया की कुल 729 जांच के सापेक्ष कुल 05 मलेरिया धनात्मक केसेज पाये गये जोकि भिन्न भिन्न क्षेत्रों के है जिनका आमूल उपचार किया जा रहा है। गम्भीर डेंगू रोगियों को भर्ती किये जाने हेतु जिला अस्पताल में 20 बेड एवं प्रत्येक ब्लाक पर 5–5 बेड आरक्षित किये गये है। एवं समस्त आवश्यक औषधि ायों की उपलब्धता सुनिश्चित कर ली गयी है।

262 वार्डों का आरक्षण फाइनल

देवरिया। जिले की दो नगर पालिकाओं और पंद्रह नगर पंचायतों के आरक्षण की सूची शाम फाइनल हो गई। जिलाधिकारी की हरी झंडी मिलने के बाद देर रात शासन को स्वीकृति के लिए भेज दी गई है। शासन की स्वीकृति के बाद सूची सार्वजनिक करने की योजना है। कई दिनों की माथापच्ची के बाद 262 वार्डों का आरक्षण नए आदेश के तहत देर शाम तैयार कर लिया। विभागीय सूत्रों की बातों पर गौर किया जाए तो नई नगर पंचायतें पथरदेवा, बैतालपुर, मदनपुर, देसही देवरिया, तरकुलवा के वार्डों के आरक्षण पहली बार होने के कारण चक्रानुक्रम में शून्य से शुरू किया गया है। जबकि देवरिया और गौर बरहज नगर पालिका के वार्डों के आरक्षण को नए गांवों के आबादी के हिसाब से तय किया गया है। देवरिया में 23 और बरहज में आठ गांव नए शामिल किए गए हैं। जिम्मदारों की बातों पर गौर किया जाए तो देर शाम आरक्षण की सूची तैयार कर ली गई। इसके बाद जिलाधिकारी जितेंद्र प्रताप सिंह के सामने सूची प्रस्तुत की गई। डीएम ने एक–एक निकाय के वार्डों के आरक्षण का गहनता से परीक्षण करने के बाद शासन को भेजने की संस्तुति कर दी। इसके बाद आरक्षण सूची देर रात शासन को स्वीकृति के लिए भेज दी गई।

किसान मोर्चा का जिला प्रशिक्षण आज

देवरिया। भाजपा किसान मोर्चा का जिला प्रशिक्षण वर्ग के लिए बैठक पीडब्लयूडी डाक बंगले पर हुई। गोरखपुर के किसान मोर्चा जिला प्रशिक्षण वर्ग प्रवासी सुनील तिवारी ने कहा कि शीर्ष नेतृत्व द्वारा तय कार्यक्रम के तहत 11 नवंबर को प्रदेश के सभी जिलों में जिला प्रशिक्षण वर्ग का आयोजन किया गया है। उन्होंने कहा कि किसान मोर्चा पदाधिकारियों को भाजपा की रीतियों–नीतियों से परिचित कराने के लिए चार सत्रों में देवरिया जनपद में प्रशिक्षण वर्ग आयोजित किया जाएगा। मोर्चा के जिलाध्यक्ष पवन कुमार मिश्र ने कहा कि जिला पंचायत सभागार में आयोजित जिला प्रशिक्षण वर्ग के उद्घाटन सत्र में मुख्य वक्ता प्रदेश महामंत्री व विधान परिषद सदस्य अनूप गुप्ता होंगे। समापन सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में सदर सांसद डॉ. रमापति राम त्रिपाठी रहेंगे। जिला प्रशिक्षण वर्ग में प्रशिक्षण लेने वाले पदाधिकारियों के पंजीकरण की व्यवस्था सुबह नौ से दस बजे तक की गई है। कहा कि किसान मोर्चा के प्रथम सत्र में 10रू30 बजे से भाजपा इतिहास विकास, 11रू45 बजे से हमारा विचार परिवार, 2रू30 बजे से संगठन संरचना में हमारी भूमिका और 3रू45 बजे से केंद्र व प्रदेश सरकार की उपलब्धियां एवं किसान मोर्चा की भूमिका विषय पर विचार रखा जाएगा। प्रशिक्षण के उद्घाटन में मुख्य रूप से प्रदेश सरकार की राज्यमंत्री विजयलक्ष्मी गौतम, जिला पंचायत अध्यक्ष गिरीश चंद्र तिवारी, जिला प्रभारी सुनील गुप्ता, जिलाध्यक्ष अंतर्यामी सिंह मौजूद रहेंगे। इस दौरान किसान मोर्चा के जिला महामंत्री हरीश त्रिपाठी, जिला उपाध्यक्ष काशीपति शुक्ल, हृदयलाल शर्मा, मुकेश राय, जिला मंत्री भगवान यादव, नागेंद्र सिंह सैंथवार, अरुण मिश्र, गोलू यादव, कमलेश मौर्य आदि मौजूद रहे।

अधिकारियों के स्थानांतरण की जिद पर अड़े अधिवक्ता

बरहज। स्थानीय तहसील के अधिवक्ता अधिकारियों के स्थानांतरण के लिए अड़े हुए हैं। परिसर में .बार एसोसिएशन के तत्वावधान में अधिवक्ताओं ने आंदोलन तेज करते हुए कार्य से विरत रहकर प्रदर्शन किया। तहसील बार संघ अध्यक्ष पंडित रामायण तिवारी और महामंत्री उदयराज चौरसिया ने प्रदर्शन का नेतृत्व किया। वकीलों का कहना था कि भ्रष्टाचार में लिप्त अधिकारियों का स्थानांतरण करने में जिम्मेदार हीलाहवाली कर रहे हैं। वकीलों ने स्थानांतरण न होने पर व्यापक आंदोलन की चेतावनी दी है। इस मौके पर नागेंद्र सिंह, चंद्रभूषण यादव, गिरीश वर्मा, लक्ष्मी दीक्षित, प्रमोद श्रीवास्तव, वीरेंद्र यादव, उधाव प्रसाद, उमेश विश्वकर्मा, अंबिकेश सिंह, राकेश सिंह आदि मौजूद रहे। संवाद

सदर तहसील कोर्ट का बहिष्कार जारी

देवरिया। सदर तहसील बार एसोसिएशन ने बैठक के पश्चात धारना प्रदर्शन कर विरोध जताया। नायब तहसीलदार बखरा के कोर्ट के बहिष्कार का निर्णय लिया गया। इस दौरान अजय कुमार श्रीवास्तव, मनोज श्रीवास्तव, शंभूनाथ सिंह, राकेश मल्ल, गिरीश नारायण तिवारी, राकेश कुमार शाही, भारत भूषण गुप्ता, अंबरीष मौर्या, विजय सेन यादव, राजीव त्रिपाठी आदि मौजूद रहे।

उच्चकों ने उड़ाई सोने की चेन

कोल्हुई। स्थानीय थाना क्षेत्र के ग्राम सभा लालपुर में उच्चकों ने एक महिला से धोखाधड़ी कर 55 हजार की सोने की चेन लेकर फरार हो गए। जानकारी के अनुसार ग्राम सभा लालपुर निवासी साधु सिंह का पुत्र सन्नी सिह बंगलूरू में नौकरी करते हैं। दोपहर दो उच्चके मोटरसाइकिल से इनके घर पहुंच कर साधु सिंह की पत्नी से यह कहते हुए सोने की चौन मांगी कि आपका पुत्र सन्नी हमारा मित्र है। चेन में लॉकेट लगवाने के लिए कहे हैं। आप हमे दे दीजिए हम चेन में लॉकेट लगवा कर एक घंटे में वापस कर देंगे। थोड़ी देर बाद जब साधु सिंह घर पहुंचे, तो खोजबीन करना शुरू किया, तो पता चला कि उनके साथ धोखाधड़ी हो गया है। साधु सिंह ने कोल्हुई थाने में तहरीर देकर मामले की जांच कर कार्रवाई करने की मांग की। थानाध्यक्ष कोल्हुई अभिषेक सिंह ने बताया कि मामले की जांच के बाद कार्रवाई की जाएगी।

रोजगार सेवक ने ग्राम प्रधान पर दर्ज कराया केस

परतावल। क्षेत्र के लक्ष्मीपुर जरलहिया ग्राम पंचायत के रोजगार सेवक ने ग्राम प्रधान पर धमकी, अभद्रता, मारपीट और सरकारी कार्य में बाधा सहित कई मामलों में मुकदमा दर्ज कराया है। श्यामदेउरवां थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत लक्ष्मीपुर जरलहिया के रोजगार सेवक शिब्बन लाल यादव ने बताया कि ग्रामसभा के काम से ब्लॉक कार्यालय के मनरेगा सेल दफ्तर में बैठा था। इसी दौरान ग्राम प्रधान श्याम पांडेय व उनके समर्थक आकर कहासुनी करने लगे। देखते ही देखते मारने पीटने लगे। कर्मचारियों द्वारा किसी तरह मारपीट को रोककर झगड़ा समाप्त कराया गया। थानाध्यक्ष रामाज्ञा सिंह ने बताया कि आरोपी ग्राम प्रधान श्याम पांडेय, ईश्वर यादव, अनील यादव, दया यादव के खिलाफ केस दर्ज कर लिया गया है।

शहर में सफाई व्यवस्था का ढिढोरा, सरकारी आंगन में ही मच्छरों का बसेरा

देवरिया। जिले में एक सप्ताह से प्रतिदिन डेंगू के दो से चार तक संदिग्ध मरीज मिल रहे हैं। अफसर सफाई व्यवस्था का ढिंढोरा पीट रहे हैं। सच यह है कि सरकारी आंगन में ही मच्छरों का बसेरा हो गया है। जिला अस्पताल से लगायत अन्य विभागों के परिसर में नालियां खुली और जाम हैं। पानी जमा होने के कारण मच्छर पनप रहे हैं। यहां तक कि छतों पर लगाई गईं टंकियों के ढक्कन भी गायब हो गए हैं।

जनपद में डेंगू तेजी से पांव पसार रहा है। साथ ही मच्छरजनित अन्य बीमारियों की चपेट में लोग आ रहे हैं। देर से बारिश होने के कारण जगह–जगह पानी जमा है। सड़ रहा है। इससे मच्छरों की भरमार हो गई है। डेंगू का मच्छर एकत्र साफ पानी में पैदा होता है। इसकी रोकथाम के लिए जिम्मेदार लापरवाह बने हुए हैं।

जिला अस्पताल के सर्जिकल वार्ड के सटे पार्क में शौचालय का पानी एकत्र होकर सड़ रहा है। उधर, से गुजरने में लोगों को परेशानी होती है। इधर से नाक बंद कर जाना पड़ता है। इससे वार्ड के बरामदे में भर्ती मरीजों को दिक्कत होती है। उन्हें संक्रामक बीमारियों की चपेट में आने का खतरा भी बना रहता है।

मेडिकल कॉलेज के ब्वॉयज हॉस्टल के मेस के बाहर रास्ते पर पानी इकट्ठा हो रहा है। इससे डेंगू के मच्छर पनपने की आशंका व्यक्त की जा रही है। वहीं, विकास भवन की छत पर लगी पानी की टंकी का ढक्कन गायब है। इसके अलावा कई सरकारी कार्यालयों की पानी की टंकियों के ढक्कन नहीं हैं। हालांकि, इन टंकियों के पानी का सेवन लोग नहीं करते हैं, लेकिन मच्छर पैदा होने की आशंका रहती है। विकास भवन परिसर में फल संरक्षण कार्यालय के समीप झाड़ियां उग आई हैं। कूड़े के ढेर लगे हैं। कलेक्ट्रेट परिसर में कुछ जगह नालियां खुलीं और जाम हैं। वहीं, अभिलेखागार के पीछे झाड़–झंखाड़ उग जाए हैं। यही हाल अन्य कुछ कार्यालय परिसर का है। शहर के मोहल्लों का भी बुरा हाल है। नालियां खुली और जाम हैं। इसमें मच्छर पैदा हो रहे हैं।

उधर, घरों में रहने वाले लोग दिन में भी मच्छर से परेशान हैं। बढ़ रहे डेंगू को देखते हुए जिलाधिकारी जितेंद्र प्रताप सिंह ने नगर पालिका को साफ–सफाई व फॉगिंग नियमित कराने के निर्देश दिए हैं, लेकिन मात्र औपचारिकता ही पूरी की जा रही है। संभावित मरीज मिलने के बाद ही संबंधित विभाग के अधिकारी व कर्मचारी सक्रिय हो रहे हैं। यही हाल रहा तो मरीजों की संख्या बढ़ सकती है। शहर के विभिन्न मोहल्लों में पीड़ित व संदिग्ध मरीज मिले हैं। इसमें रामनाथ देवरिया, न्यू कॉलोनी, ट्यूबवेल कॉलोनी, रामगुलाम टोला, अबूबकर नगर, सिंधी मिल, कोतवाली, पुलिस लाइंस आदि शामिल हैं। जिला अस्पताल में अब तक तकरीबन पचपन से अधिक मरीजों को भर्ती कर इलाज किया गया है। इस संबंध में जिला मलेरिया अधिकारी राधेश्याम ने बताया कि डेंगू से पीड़ित लोगों में गैर जिले व प्रांत से आने वालों की अधिक संख्या अधिक है। जिले में संक्रमित होने वालों की संख्या कम है। संभावित मरीज की जानकारी होने पर विभाग के इंपेक्टर व रैपिड रिस्पांस टीम (आरआरटी) पहुंचकर डेंगू मच्छर के सोर्स को नष्ट करती है। साथ ही एंटी लार्वा का छिड़काव कराया जाता है।

हर रोज दो वार्डों में फॉगिंग

देवरिया। नगर पालिका के ईओ रोहित सिंह ने बताया कि एक से पंद्रह नवंबर तक नगर सेवा पखवाड़ा के तहत नियमित रूप से दो वार्डों में प्रतिदिन छिड़काव कराया जा रहा है। जलभराव वाले स्थानों का सघन निरीक्षण किया जा रहा है। पेयजल की गुणवत्ता की टेस्टिंग की जा रही है। इसके अलावा हाई रिस्क वाले डेंगू धनात्मक क्षेत्रों में एंटी लार्वा का छिड़काव कराया जा रहा है। इसके लिए कंट्रोल रूम की भी स्थापना की गई है।

अधिवक्ताओं ने न्यायिक कार्य का किया बहिष्कार

जिला ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन के अध्यक्ष के खिलाफ मामलों को लेकर हैं आंदोलित

देवरिया। जिला ट्रांसपोर्ट बार एसोसिएशन के अध्यक्ष राम प्रवेश सिंह के मामलों को लेकर अधिवक्ता लामबंद हो गए हैं। दीवानी न्यायालय सहित अन्य तहसील मुख्यालयों पर अधिवक्ताओं ने कार्य बहिष्कार कर विरोध जताया है। डिस्ट्रिक्ट बार एसोसिएशन की बैठक अशोक कुमार दीक्षित के नेतृत्व में हुई। इसमें एआरटीओ के अधिवक्ता राम प्रवेश सिंह के मामले में सभी अधिवक्ताओं में काफी रोष है। इसको लेकर दीवानी कचहरी अधिवक्ताओं ने न्यायिक विरत रहे। इसके बाद अधिवक्ताओं ने पत्रक दिया। संघ के सचिव अधिवक्ता शक्ति धर पाण्डेय ने बताया कि अधिवक्ताओं से अन्याय नहीं होने दिया जाएगा।

जबकि जिला ट्रांसपोर्ट बार एसोसिएशन की बैठक अध्यक्ष ब्रजेश की अध्यक्षता में हुई। इसमें राज्यमंत्री विजय लक्ष्मी गौतम पर जबरन भूमि कब्जा करने का आरोप लगाया गया। अधिवक्ताओं ने आरोप लगाया है कि फर्जी मुकदमे में जेल भेजने की धमकी दी जा रही है। इसी तरह भाटपार रानी तहसील अधिवक्ता संघ ने तहसील सभागार में संघ के अध्यक्ष सुनील पांडेय की अध्यक्षता में बैठक कर न्यायिक कार्य से विरत रहने का फैसला लिया। सभी अधिवक्ताओं ने सर्वसम्मति से तहसील बार एसोसिएशन देवरिया द्वारा अपनी मांगों को लेकर चलाए जा रहे आंदोलन के समर्थन में यह निर्णय लिया। उन्होंने इसकी प्रति उप जिलाधिकारी सहित सभी न्यायालयों में प्रेषित किया। जिलाधिकारी से मांग की कि तहसील देवरिया में भ्रष्ट अधिकारियों का स्थानांतरण तत्काल किया जाए नहीं तो जिले भर के अधिवक्ता पूरे जनपद में आंदोलन चलाएंगे। उन्होंने ट्रांसपोर्ट अधिवक्ता संघ के सदस्य रामप्रवेश के उत्पीड़न की कार्रवाई को भी बंद करने की मांग की। इस दौरान नागेश दुबे, प्रदीप गुप्ता, लाल साहब यादव, रामप्रवेश उपाध्याय, चंद्रशेखर सिंह, सुशील कुमार ओझा आदि अधिवक्ता मौजूद रहे।

प्रेमिका की बेवफाई से नाराज युवक ने ग्लेंडर मशीन से की गला काटने की कोशिश

महराजगंज। पुरन्दरपुर थाना क्षेत्र के एक गांव के प्रेम प्रसंग की चर्चा सोशल मीडिया से लेकर आम लोगों के बीच खूब हो रही है। हैदराबाद में काम करने गए युवक ने प्रेमिका से धोखा मिलने के बाद सोशल मीडिया पर लाइव आकर प्रेमिका की बेवफाई का जिक्र करते हुए ग्लेंडर मशीन से खुद का गला काटने की कोशिश की। युवक के आत्महत्या की कोशिश की जानकारी मिलते ही परिवार वाले हैदराबाद के लिए रवाना हो गए हैं।

जानकारी के मुताबिक युवक का क्षेत्र की एक युवती से प्रेम प्रसंग चल रहा था। कुछ दिन पहले हैदराबाद काम करने गया था। इसी बीच युवती के परिजनों ने उसकी शादी कहीं और तय कर दी। इसकी भनक जब युवक को लगी तो प्रेमिका से संपर्क साधने की काफी कोशिश की, लेकिन संपर्क नहीं हो सका। जिससे आहत युवक ने सोशल मीडिया पर लाइव आकर ग्लेंडर मशीन से खुद का गला काटकर जान देने की कोशिश की। लाइव वीडियो पर गला काटने की घटना के बाद क्षेत्र में हड़कंप मच गया। युवक के जानने वालों ने तत्काल उसके परिजनों को सूचना दी। वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है।

वायरल वीडियो में गला काटने से पहले युवक कह रहा है कि भाई नम्बर डाल दिया हूं। सभी लोग देख लें। इसकी भी शादी नहीं होनी चाहिए, जैसे मेरी नहीं हुई है। अब किसी से मेरी मुलाकात नहीं होगी। उसके बाद बगल में रखे ग्लेंडर मशीन उठा युवक खुद का गले पर चला देता है, इसमें बाद खून निकलने लगता है और वह बिस्तर पर लेट जाता है।

पुरन्दरपुर थाना प्रभारी उमेश कुमार ने कहा कि मामले की जानकारी मिली है। सूचना पाकर परिजन हैदराबाद के लिए रवाना हो गए है। तहरीर मिलने के बाद कार्रवाई की जाएगी। परिजनों के मुताबिक युवक की हालत गंभीर है। उसे हैदराबाद के अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

दूसरे दिन भी जारी रहा बोर्ड सभासदों का धरना

दैनिक बुद्ध का संदेश

शोहरतगढ़/सिद्धार्थनगर। बुद्धवार की सुबह करीब 11 बजे से धरने पर बैठे नगर पंचायत के 9 सभासद के पक्ष में शासन द्वारा नामित सभासदों समेत आरएसएस के पूर्व पदाधिकारी सहित अनुसांगिग संगठन के पदाधिकारी सामने आए है। इसके साथ ही सीमा विस्तारित क्षेत्र के निवर्तमान ग्राम प्रधान व प्रतिनिधि भी धरने पर बैठे सभासदों का समर्थन कर रहे है। विदित हो कि बीते बुधवार को वित्तीय समेत अन्य आरोपों के साथ नगर पंचायत कार्यालय परिसर में धरने पर बैठ गए थे। समाचार लिखे जाने तक करीब 36 घंटे बाद भी जनपद स्तर के किसी अधिकारियों की नजर धरना दे रहे सभासदों पर नही पड़ी। नगर पंचायत अध्यक्ष एवं अध्यक्ष पुत्र सौरभ गुप्ता पर आरोप है कि उनके द्वारा स्वच्छ भारत मिशन में घोटाला एवं विवाह भवन में व्यक्तिगत नाम से शिलापट्ट का लगाना, सरकारी कर्मचारी के नाम से भुगतान करना, पार्टी मीटिंग के लिए कार्यालय का उपयोग करना समेत 13 विन्दुओं का आरोप पत्र तैयार कर उच्च अधिकारियों से शिकायत की गई थी। इस दौरान सभासद मनोज आर्या, सभासद डॉ राज कुमार गुप्ता के साथ संघ पदाधिकारी राममिलन त्रिपाठी, मनोनीत सभासद, अल्ताफ हुसैन आदि मौजूद रहे। भाजपा के

- सभासदों के पक्ष में आये शासन से नामित सभासद समेत भाजपा व आरएसएस के पूर्व पदाधिकारी
- धरने के 36 घण्टे बाद भी किसी अधिकारियों की नही पड़ी नजर- सूत्र

कुमार गुप्ता, सभासद संजीव जायसवाल, सभासद प्रतिनिधि बाबू अंसारी, सभासद प्रतिनिधि रवि अग्रवाल, सभासद नियाज अहमद, सभासद प्रतिनिधि अफसर अंसारी, सभासद प्रतिनिधि अवधेश कुमार शिवशक्ति शर्मा ने भी सभासदों के धरने के समर्थन किया है। इस सम्बंध में जिलाधिकारी महोदय से बात करने की कोशिश की गई तो उनसे संपर्क नही हो सका।

भ्रटाचार मुक्त शासकीय कार्यशैली के हकीकत को बयां करता सत्याग्रह संकल्प

गोरखपुर। उत्तर प्रदेश लोक निर्माण विभाग और विकास प्राधिकरण

गोरखपुर भ्रष्टाचार के मूल उत्पादन केंद्र बने हुए है जिसके विरुद्ध तीसरी आंख मानवाधिकार संगठन द्वारा मुख्य सचिव उत्तर प्रदेश शासन लखनऊ को कतिपय बिंदुओं का ज्ञापन प्रेषित करते हुए दिनाक 13 जुलाई 2021 से चलाए जा रहे सत्याग्रह संकल्प से, भ्रष्टाचार मुक्त स्वांग का शासकीय कार्यशैली के व्यवहारिक स्वरूप की हकीकत नजर आ रही है यदि व्यवस्था के पोषक भ्रष्टाचार मुक्त समाज एवम व्यवस्था को स्थापित करने में अक्षम है तो उन्हें भ्रष्टाचार को वैधानिक स्वरूप देने पर विचार करना चाहिए, ताकि विश्व पटल पर सार्वजनिक भ्रष्टाचार की सूची से भारत देश के नाम को विलुप्त कराते हुए भ्रष्टाचार के विरुद्ध प्रचलित सत्याग्रह संकल्प को उद्देश्य विहीन घोषित किया जा सके। अब तक ऐसा न करना इस बात का परिचायक है कि सरकार भ्रष्टाचार मुक्त कार्यशैली और व्यवस्था की पोषक नही है जिसकी पुष्टि भ्रष्टाचार के विरुद्ध सी एम सिटी गोरखपुर में विगत वर्षो से प्रचलित सत्याग्रह संकल्प पर शिक्षक समुदाय, पत्रकारिता समुदाय और जन समर्थन के लोकप्रियता को नजर अंदाज कर, वर्तमान सरकार के उपेछात्मक कार्यशैली के तुलनात्मक अवलोकन से किया जा सकता है जो इस बात का इशारा करती हैं की देश, प्रदेश में लोक शाही काबिज है और लोकतंत्र नारद है जो स्वस्थ लोकतंत्र के शुभ संकेत नही है।

कुलपति ने की नैक टीम दौरे की तैयारियों की समीक्षा

गोरखपुर। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर राजेश सिंह की अध्यक्षता में आज नैक मूल्यांकन के लिए नैक टीम के प्रस्तावित दौरे से संबंधित तैयारियों की समीक्षा के लिए महत्वपूर्ण बैठक प्रशासनिक भवन में आयोजित की गई। ज्ञातव्य है कि गोरखपुर विश्वविद्यालय विश्वविद्यालय ने पिछले दिनों नैक मूल्यांकन के लिए एसएसआर (सेल्फ स्टडी रिपोर्ट) जमा करा दिया है। इस महत्वपूर्ण समीक्षा बैठक में नैक के विभिन्न क्राइटेरिया के कोऑर्डिनेटर, समस्त संकयाध्यक्ष, विभागाध्यक्ष, कुलसचिव, वित्त अधिकारी तथा परीक्षा नियंत्रक मौजूद रहे। कुलपति ने सभी विभागाध्यक्ष से अनुरोध किया कि वो नैक टीम की विजिट के लिए अपने विभागों की तैयारियां पूरी कर ले और विभाग से संबंधित एक प्रेजेंटेशन नैक टीम के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए तैयार कर लें। विभिन्न क्राइटेरिया कोऑर्डिनेटर से कहा गया कि वह अपने क्राइटेरिया में विभागों द्वारा जो तैयारी करनी है वो विभागाध्यक्ष के साथ समन्वय स्थापित कर पूरा करा लें। कुलपति ने कहा कि नैक टीम के आने के पहले तैयारियों का जायजा लेने के लिए एक मॉक विजिट भी दिसंबर महीने में कराई जाएगी।

अक्षांश पाण्डेय के जन्मदिन पर बेटे को जन्मदिन की बहुत बहुत बधाई और शुभकामनाएं।
डॉ आशीष पाण्डेय
(मंडल संयोजक चिकित्सा प्रकोष्ठ भाजपा
उसका बाजार सिद्धार्थनगर)

म्योरपुर में विशाल आदिवासी वनवासी सम्मेलन का हुआ आयोजन

दैनिक बुद्ध का संदेश

सोनभद्र। गुरुवार को म्योरपुर खेल मैदान पर जिला पंचायत सदस्य सुषमा सिंह द्वारा विशाल आदिवासी वनवासी सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में आये बघाडू जिला पंचायत सदस्य जुबेर आलम ने सम्मेलन में आये आदिवासी समुदाय के लोगो को उनके अधिकारों के बारे में बताया। सम्मेलन में आये आइपीएफ के प्रदेश संगठन के महासचिव दिनकर कपूर ने सम्बोधित करते हुए कहा कि वनाधिकार कानून के तहत आदिवासियों को सरकार कब्जे के आधार पर पट्टा नही देना चाहती बल्कि उनके कब्जे के जमीनों से बेदखल करना चाहती है। सरकार का कहना है कि जिनके पास 16 बीघा जमीन है उनको उनके जमीन पर मालिकाना हक नही दिया जाएगा।सरकार पूंजीपतियों को

जंगल व पहाड़ लीज पर देकर उन्हें लाभ पंहुचाना चाहती है और वन भूमि से आदिवासियों को बेदखल करने का कुचक्र रच रही है। वनाधिकार कानून के तहत वन समिति में प्रेसित दावों के हिसाब से जमीन पर मालिकाना हक न देकर सिर्फ दो चार बिस्वा जमीन का पट्टा दे रही है।जो आदिवासियों के साथ छल है जब तक आदिवासियों को उनकी कब्जे की जमीनों पर मालिकाना हक नही मिलेगा तब तक हम लोगो का आंदोलन जारी रहेगा। मजदूर किसान मंच के नेता राजेश सचान ने कहा कि हमारा जिला 20 पिछडो जिले में आता है जबकि सबसे ज्यादा राजस्व इसी जिले से सरकार को मिलता है।इसके बावजूद इस जिले में आदिवासी व गरीब समाज की लड़कियों के लिए शिक्षा व रोजगार की मुकम्मल व्यवस्था नही है। यहाँ की परियोजनाओं में स्थानीय आदिवासियों को रोजगार नही मिलता। 15 नवम्बर को इस जिले में मुख्यमंत्री आदित्यनाथ योगी व राज्यपाल मां आनंदीबेन पटेल आ रही है। हमलोग चाहते है कि आदिवासियों को उनके दावों के हिसाब से भूमि पर पट्टा मिले। हमारी लड़ाई लोकतंत्र के लिए है। म्योरपुर जिला पंचायत सदस्य शुषमा सिंह ने कहा कि हम आदिवासी वनवासी के अधिकारों को जानने के लिए इकट्ठे हुए है। हमारे पूर्वज जंगलों में ही निवास करते थे और जंगल पर ही निर्भर थे। आज हम आदिवासी वनवासियों को उनके अधिकारों से वंचित किया जा रहा है।हमे अपना अधिकार छोड़ना नही है लेना है सरकार हमको हमारी जमीनों से बेदखल करना चाहती है हमे इसके लिए एकजुट होकर लड़ाई लड़नी होगी। आदिवासी वनवासी ही जंगल को संरक्षित कर सकते है और जंगल को बचा सकते है। सरकार दो चार विस्वा जमीन पट्टा देकर हमारा अधिकार छीन रही है। जो अधिकार हमे 2006 में दिए गए वे छीने कैसे जा सकते है। कार्यक्रम का संचालन मजदूर किसान मंच के नेता भोला पनिका ने किया। इस दौरान, सब्बीर अहमद, राजेन्द गोंड, अनवर अली, सहित सैकड़ो की संख्या में आदिवासी ग्रामीण मौजूद रहे।

ऊर्जा मंत्री ए.के.शर्मा ने स्थलीय निरीक्षण कर,दिए आवश्यक दिशा निर्देश

दैनिक बुद्ध का संदेश

बाराबंकी। प्रदेश के नगर विकास ऊर्जा मंत्री ए.के.शर्मा नगर पालिका नवाबगंज के अन्तर्गत सत्य प्रेमी नगर, कैलाश आश्रम वार्ड तथा फैजुल्लागंज में साफ सफाई व्यवस्था,फागिंग, एण्टीलार्वा का छिड़काव, जलभराव एवं सड़कों की स्थिति तथा डेंगू, मलेरिया, चिकन गुनिया आदि मच्छर जनित बीमारियों के प्रसार का स्थलीय निरीक्षण किया। इस दौरान जिलाधिकारी अविनाश कुमार, मुख्य विकास अधिकारी एकता सिंह उपस्थित रहे। नगर विकास ऊर्जा मंत्री ने निरीक्षण के दौरान सम्बन्धित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश देते हुए कहा कि समस्त वार्डो में साफ सफाई की समुचित व्यवस्था बनी रहे। बताते चले कि फैजुल्लागंज में खाली पड़े मैदान में कूड़ा अत्यधिक इकट्ठा होने से अधिकारियो को निर्देश देते हुए कहा कि शादी विवाह के दौरान निकलने वाले कूड़े को खाली पड़े मैदान में पाये जाने पर सम्बन्धित को नोटिस देते हुए उचित कार्यवाही करें।

फैजुल्लागंज वार्ड का निरीक्षण के दौरान ग्रामवासियों से वार्ता भी की। उन्होंने उपस्थित लोगों को डेंगू से बचाव हेतु आवश्यक जानकारी देते हुए जागरूक भी किया। उन्होंने कहा कि सभी लोग अपने आस–पास में साफ–सफाई जरूर बनाये, जिससे बीमारी से बचा जा सके। उन्होंने कहा कि खुली पड़ी नालियां ढक्कन से ढकी अवश्य रहे। इस दौरान उपजिलाधिकारी नवाबगंज, परियोजना निदेशक डूडा, अधिशासी अधिकारी नगर पालिका सहित सम्बन्धित विभागीय अधिकारी मौजूद रहे।

सोनी मोटर्स इलेक्ट्रिक शोरूम का हुआ भव्य उद्घाटन

गोरखपुर। पेट्रोल और डीजल की बढ़ती कीमतों के कारण

और गाड़ियों द्वारा निकलने वाले धुँए से हो रहे प्रदूषण को देखते हुए बाजार में अब इलेक्ट्रिक गाड़ियों की मांग बढ़ती जा रही है । फिलहाल इन इलेक्ट्रॉनिक गाड़ियों में इलेक्ट्रिक स्कूटर सबसे ज्यादा बिक रहे हैं । तमाम जगहों पर इलेक्ट्रिक स्कूटीओं के शोरूम खुल रहे हैं । इसी क्रम में आज गोरखपुर जनपद के नौसढ चौराहे पर सोनी मोटर्स नामक इलेक्ट्रिक स्कूटी के शोरूम और सर्विस सेन्टर का उद्घाटन हुआ । शोरूम का उद्घाटन गोरखपुर विकास प्राधिकरण एवं गोरखपुर एयरपोर्ट अथॉरिटी के सदस्य दुर्गेश बजाज ने किया । अपने उद्बोधन में दुर्गेश बजाज ने कहा कि गाड़ियों के प्रदूषण को देखते हुए इलेक्ट्रिक स्कूटी का मार्केट निश्चित रूप से तेजी पकड़ रहा है । यह कहना गलत नहीं होगा कि इलेक्ट्रिक स्कूटी आज समय की मांग बन चुकी है । सोनी मोटर्स के मालिक लोकेश निगम ने कहा कि हमारी प्राथमिकता यही रहेगी कि हम अपने एजेंसी के माध्यम से लोगों को बढ़िया से बढ़िया गाड़ी उपलब्ध कराएं और पेट्रोल गाड़ियों की सर्विसिंग में जो समय और पैसे की लागत लगती है उससे कम में हम उन्हें सर्विस की व्यवस्था दें । शोरूम को खुलवाने से लेकर उद्घाटन करवाने में समाजसेवी विद्याधर गुप्ता का महत्वपूर्ण योगदान रहा । कार्यक्रम को सफल बनाने में मार्कंडेय निगम, गिरधारी तिवारी, चंदन अग्रवाल,प्रभात दुबे, महेश तिवारी सोनू निगम शिव कुमार साह, रवि गुप्ता आदि का योगदान रहा ।

हक हमारा भी तो है अभियान के तहत गरीब मजदूरों के बिच पहुचे न्यायधीश

दैनिक बुद्ध का संदेश

सोनभद्र। नालसा एवं सलसा के निर्देश पर सोनभद्र जिले के विभिन्न सुदूर क्षेत्रों में ष्हक हमारा भी तो है अभियान को घर–घर तक पहुचाने मे प्राधिकरण के सचिव एवं पी0 एल0 वी0 कोई कसर नहीं छोड़ रहे है। इसी कड़ी मे गुरुवार को

जनपद न्यायधीशध्अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण अशोक कुमार यादव प्रथम के निर्देशन मे जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के पूर्ण कालिक सचिव विनय कुमार सिंह के द्वारा रावर्ट्सगंज ब्लाक के सेंधुरी ग्राम पंचायत के राजस्व गाँव मड़रा के पंचायत भवन पर विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। विधिक जागरूकता शिविर को सम्बोधित करते हुए कहा की गरीब, मजदूर, शोषित, वंचित समाज से तालुका रखने वाले लोगो को अब न्याय के लिए कही भटकना नहीं पड़ेगा। आम लोगो के बिच नालसा एवं सलसा के द्वारा चलाये जा रहे विभिन्न महत्वपूर्ण योजनाओ के बारे में विस्तार से बताया। जिससे जिला स्तर पर स्थापित जिला विधिक सेवा प्राधिकरण मे आकर न्याय प्राप्त कर सके इसके लिए सभी लोगो को सबसे पहले कानून के प्रति जागरूक होना होगा। तभी नालसा एवं सालसा के द्वारा चलाई जा रही योजनाओ के बारे मे जानकारी हो पाएगा। जब तक लोग कानून के प्रति जागरूक नही होंगे। तब तक नालसा एवं सालसा की योजनाओ का लाभ प्राप्त नही कर सकते। इसलिए न्याय स्वयं आपके द्वार पर आया है। आगामी 12 नवम्बर को लगने वाले लोक अदालत के बारे में विस्तार से चर्चा करते हुए उपस्थित ग्रामीणों को अधिक से अधिक संख्या मे लाभ उठाने के लिए जागरूक किया गया। वही सदर ब्लाक के खण्ड विकास अधिकारी उमेश कुमार ने बताया की लोक अदालत का जो फैसला होता हैं वह दोनो पक्षों की आपसी सहमति के आधार पर होता है। सामाजिक कार्यकर्ता आर पी मिश्रा ने कार्यक्रम मे आये हुए अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया इस मौके पर ग्राम विकास अधिकारी रामविलास यादव, ग्राम प्रधान राजेन्द्र कुमार, पी एल वी राजन चौबे, मनोज कुमार दीक्षित, संतपति मिश्रा, इमरान अंसारी, कन्हैया कुमार सहित सैकड़ो ग्रामीण उपस्थित रहे।

विज्ञान प्रदर्शनी में पेंटिंग प्रदर्शनी का हुआ आयोजन

दैनिक बुद्ध का संदेश

घोरावल/सोनभद्र। स्थानीय भारतीय इंटर कालेज में त्रिदिवसीय

विज्ञान प्रदर्शनी के दूसरे दिन बृहस्पतिवार को छात्रों ने पेंटिंग प्रदर्शनी का आयोजन किया। राष्ट्रीय विज्ञान व प्रौद्योगिक संचार हेतु भारत सरकार द्वारा प्रायोजित विज्ञान प्रदर्शनी मेला का आयोजन आकर्षण का केंद्र रहा। पेंटिंग, सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी विज्ञान खोज पर आधारित माडल प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सहायक प्रो जीबी पंत विश्व विद्यालय प्रयागराज डॉ प्रमोद पांडेय ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि छात्रों को लक्ष्य निर्धारित करके कार्य करना होगा। बिना लक्ष्य के कोई सफल नही हो सकता है। मन एक प्रयोगशाला है इसमें तरह तरह के विचार आते रहते हैं लेकिन लक्ष्य से भटकना नहीं चाहिए। उन्होंने महाभारत का उदाहरण दिया। जिसमें अर्जुन को चिड़िया की आंख ही दिख रही थी। आगे उन्होंने स्वामी विवेकानंद का उदाहरण देकर बताया कि कैसे उन्होंने मन को एकाग्र होकर अपने लक्ष्य को प्राप्त किया। इस अवसर पर रितांशु गुप्ता, कार्यक्रम के संयोजक सिद्धार्थ पांडेय, गणेश देव पांडेय, रामानंद पांडेय, प्रमोद श्रीवास्तव, प्रेम प्रकाश पांडेय, लवकुश चौबे, रवि सिंह, रीना राय, सुमित पटेल, मृत्युंजय सिंह, कमलेश पटेल, शांतनु पांडेय आदि मौजूद रहे।

बुद्ध का संदेश

(हिन्दी दैनिक समाचार पत्र)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती पुष्पा शर्मा द्वारा बुद्धा प्रिन्टर्स , ज्योति नगर मधुकरपुर, निकट–हीरो होण्डा एजेन्सी, जनपद–सिद्धार्थनगर (उ0प्र0) 272207 से मुद्रित एवं प्रकाशित।

आर.एन.आई. नं.–UPHIN/2012/49458

संस्थापक

स्व. के.सी. शर्मा

सम्पादक

राजेश कुमार शर्मा

9415163471, 9453824459

दैनिक बुद्ध का संदेश

9795951917,9415163471

@budhakasandesh

budhakasandeshnews@gmail.com

www.budhakasandesh.com

इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी.एक्ट. के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन समस्त विवाद जनपद–सिद्धार्थनगर न्यायालय के अधीन ही मान्य होगा।

जनपद सिद्धार्थनगर के महत्वपूर्ण नम्बर

जिलाधिकारी	मो0:– 9454417530
मुख्य विकास अधिकारी	मो0:– 9454464749
एस डीएम नौगढ़	मो0:– 9454415936
एस डीएम बांसी	मो0:– 9454415937
एस डीएम डुमरियागंज	मो0:– 9454415939
एस डीएम इटवा	मो0:– 9454415939
एस डीएम शोहरतगढ़	मो0:– 9454415940
पुलिस अधीक्षक	मो0:– 9454400305
थाना मोहाना	मो0:– 9454404239
थाना जोगिया उदयपुर	मो0:– 9454404235
थाना गोलौरा	मो0:– 9454404233
थाना पथरा बाजार	मो0:– 9454404240
थाना त्रिलोकपुर	मो0:– 9454404243
थाना उसका बाजार	मो0:– 9454404244
थाना शोहरतगढ़	मो0:– 9454404241
थाना खेसरहा	मो0:– 9454404236
थाना इटवा	मो0:– 9454404234
थाना चिल्हिया	मो0:– 9454404229
थाना ढेबरूआ	मो0:– 9454404230
थाना भवानीगंज	मो0:– 9454404228
थाना मिश्रौलिया	मो0:– 9454404238
थाना सि0नगर	मो0:– 9454404242
थाना डुमरियागंज	मो0:– 9454404232
थाना लोटन	मो0:– 9454404237
महिला थाना	मो0:– 9454404891

राष्ट्रीय दैनिक

बुद्ध का संदेश

शोहरतगढ़ पुलिस ने अपहृता को बरामद कर अभियुक्त को भेजा जेल

दैनिक बुद्ध का संदेश

शोहरतगढ़/सिद्धार्थनगर। शोहरतगढ़ पुलिस ने 48 घण्टे के भीतर ही अपहरणकर्ता को बरामद कर उसे जेल भेज कर

विधिक कार्यवाही में जुट गई है। घटना स्थल से मिली जानकारी के मुताबिक बीती 7 नवम्बर को अपहरण आदि के सम्बंध में शोहरतगढ़ पुलिस ने मु.अ.सं. 380ध्22 धारा 363ध्366ए भा.द.वि दर्ज किया था और मुखबिर की सूचना के आधार पर 09 नवम्बर को मु.अ.सं. 380ध्22 धारा 363ध्366ए भा.द.वि. से सम्बन्धित अभियुक्त प्रदुम्न यादव पुत्र पाटेश्वरी यादव निवासी ग्राम बसहिया थाना कठेला समय माता जनपद सिद्धार्थनगर उम्र करीब 22 वर्ष खुनुवां बाजार टैक्सी स्टैण्ड से समय 15.55 बजे गिरफ्तार जेल भेज दिया गया। पंकज कुमार पाण्डेय प्रभारी निरीक्षक पंकज कुमार पांडेय ने बताया कि मुखबिर और टीम की बदौलत यह सफलता मिली है। अपराधियों से निपटने के लिए शोहरतगढ़ पुलिस तैयार है। इस दौरान उ.नि. विजय यादव, का. राजकमल यादव, म.का. साधना पासवान आदि मौजूद रहे।

न्याय पंचायत स्तरीय बाल क्रीड़ा प्रतियोगिता में कुसुम्भा का बना रहा दबदबा

दैनिक बुद्ध का संदेश

बाराबंकी। देवा क्षेत्र में न्याय पंचायत मलूकपुर की बेसिक

स्तरीय बाल क्रीड़ा प्रतियोगिता कम्पोजिट विद्यालय वतियामऊ में आयोजित की गई। जिसमें न्याय पंचायत के समस्त विद्यालयों के बच्चों ने प्रतिभाग किया प्रतियोगिता का शुभारंभ विद्यालय की वरिष्ट शिक्षिका मीना नोडल कविता वर्मा व प्रदीप मिश्रा एवं विजय प्रताप सिंह नोडल शिक्षक आदर्श त्रिपाठी द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित व मां सरस्वती पर पुष्प अर्पित कर किया गया। विद्यालय प्रांगण में विद्यालय की शिक्षिका सोनम पटेल द्वारा बैज व आदित्य भारती द्वारा रोली चंदन लगाकर स्वागत किया गया। संकुल शिक्षक प्रदीप मिश्र द्वारा क्रीड़ा प्रतियोगिता के दिशा निर्देश का संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की गई व्यायाम शिक्षक आशीष प्रकाश की देखरेख में न्याय पंचायत के समस्त विद्यालयों के बच्चों ने। अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। जिसमें प्राथमिक विद्यालय कुसुम्भा की लड़कियों ने कबड्डी मेंअपना कब्जा बरकरार रखा। जिसका प्रमुख श्रेय विद्यालय की शिक्षिका मंजू वर्मा को रहा। खंड शिक्षा अधिकारी रामनारायण यादव जी द्वारा समस्त बच्चों को पुरस्कार भी वितरित किया गया। इस अवसर पर प्रमुख रूप से विद्यालय की वरिष्ट शिक्षिका कविता वर्मा ,प्रदीप मिश्रा, विजय प्रताप सिंह मंजू वर्मा ,नीतू वर्मा, विनय कुशवाहा, अनुज कुमार विजय बहादुर ,दीप्ति सिंह आदित्य भारती ,सोनम पटेल आदर्श त्रिपाठी, तरुण विश्वास ,आदि शिक्षक उपस्थित रहे।

नारी के आकर्षण को बढ़ाने का काम करते हैं होंठ, इन तरीकों से दें इन्हें निखार

खूबसूरत गुलाबी होंठों की चाहत सभी महिलाओं को होती है जो कि आपकी मुस्कान को सुंदर बढ़ाने के साथ ही रूप निखारने का भी काम करते हैं। होंठ नारी के आकर्षण को बढ़ाने का काम करते हैं। लेकिन अक्सर देखा जाता हैं कि होंठो की नमी छिन जाने या ब्यूटी प्रॉडक्ट्स के इस्तेमाल से होंठ काले हो जाते हैं और इनकी खूबसूरती कम हो जाती है। गुलाबी होंठों की चाहत भला किस महिला को नहीं होती। वहीं, अगर गुलाबी होंठ हो तो चेहरे की खूबसूरती कई गुना बढ़ जाती है। यही वजह है कि हर कोई गुलाबी होंठ पाने की चाह रखता है। ऐसे में आज हम आपके लिए कुछ ऐसे घरेलू उपाय लेकर आए हैं जिनकी मदद से होंठों को निखार देने में मदद मिलेगी। आइये जानते हैं इन उपायों के बारे में

चुकंदर

सबसे पहले चुकंदर को अच्छी तरह से धो लें फिर इसका छिल्का उतारकर घियाकस से कस लें या कद्दूकस कर लें। इसके बाद कद्दूकस किया हुआ चुकंदर सुखा लें। सूखे चुकंदर को पीस कर पाउडर बनाएं। दो चम्मच चुकंदर के पाउडर को दो चम्मच बादाम के तेल में मिलाकर टिंट बना लें। इसे किसी साफ जार या किसी छोटी शीशी में भरकर फ्रीज में रख लें। दिन में 2 से 3 बार व रात में होठों को साफ करके उंगली से लगाकर सो जाएं।

नींबू

नींबू का इस्तेमाल अक्सर काले घेरों को दूर करने के लिए किया जाता है। आप इसका इस्तेमाल होंठों के कालेपन को दूर करने के लिए भी कर सकती हैं। नींबू के ब्लीचिंग गुण होंठों के गहरी हो रही रंगत को कम करने में बहुत कारगर होते हैं। अच्छा रहेगा, अगर आप नींबू की कुछ बूंदों को अपने होंठों पर लगाकर सो जाएं। एक–दो महीने तक यह ऐसा करते रहने से होंठों का कालापन दूर हो जाएगा।

गुलाब जल

गुलाबी होंठ पाने के लिए गुलाब से अच्छा उपाय भला और क्या हो सकता है। रोज वॉटर तो आपके घर में होगा ही, तो रोज वॉटर में थोड़ा–सा शहद मिलाएं और रोजाना इससे अपने होठों पर मलें। धीरे–धीरे आपके होंठ गुलाबी होने लगेंगे। इसके अलावा गुलाब के फूल की पत्तियों को थोड़े–से दूध में भिगो दें। इसमें थोड़ा–सा शहद मिलाएं। अब इस पेस्ट को रोजाना सोने के पहले होठों पर लगाएं। कुछ दिनों में आप पाएंगी कुदरती खूब्बसूरत होंठ।

दूध और केसर

कच्चे दूध में केसर को पीसकर मिला लें, फिर उसे अपने होठों पर मलें। रोजाना इस प्रक्रिया को दोहराने से होठों का कालापन दूर तो होगा ही इसके साथ ही आपके होंठ पहले से कही ज्यादा खूबसूरत और आकर्षक भी हो जाएंगे।

हल्दी पाउडर और बेसन

हल्दी पाउडर और बेसन को समान मात्रा में दूध के साथ मिलाकर पेस्ट बनाएं, तथा इसे चेहरे और गर्दन पर लगाएं। सूख जाने के बाद गुनगुने पानी से धो लें। इससे चेहरे की चमक बनी रहती है। हल्दी त्वचा पर निशान या दाग को मिटाने में अच्छा कार्य करती है। यह एक बेहतर एंटीसेप्टिक है। त्वचा में चमक लाती है, तथा त्वचा संक्रमण समेत कई तरह के त्वचा रोगों के लिए रामबाण है।

अनार

होंठों की देखभाल के लिए अनार से बढ़कर कुछ भी नहीं। ये होंठों को पोषित करने के साथ ही मॉइश्चराइज करने का काम भी करता है। होंठों की नमी लौटाने के साथ ही अनार उन्हें नेचुरली गुलाबी भी करता है। अनार के कुछ दानों को पीस कर उसमें थोड़ा सा दूध और गुलाब जल मिला लें। इस पेस्ट को होंठों पर हल्के हाथ से मलने पर जल्दी फायदा होता है।

चीनी और मक्खन

चीनी एक एक्सफोलिएट के रूप में काम करता है। यह होठों पर मृत त्वचा हुई कोशिकाओं से छुटकारा पाने में मदद करता है। मक्खन रंग बढ़ाने और अपने होठों पर चमक बढ़ाने के लिए मदद करता है। मक्खन के दो चम्मच के साथ चीनी पाउडर के तीन चम्मच के साथ एक मिश्रण बनाए अपने होठों पर लगाएं।

जैतून का तेल

जैतून का तेल भी आपके गहरे होंठों को हल्का बनाने में कारगर साबित हो सकता है। जैतून के तेल की कुछ बूंदों को उंगलियों पर लगाकर, प्रभावित जगह पर हल्की मसाज करें। ऐसा करने से होंठ मुलायम भी बनते हैं।

ब्रालेट पहन जब नम्रता मल्ला ने दिखाया अपना कर्वी फिगर, फोटोज देख सर्दी में लोगों के छूटे पसीने

भोजपुरी इंडस्ट्री में अपनी ग्लैमरस अदाओं से फैंस पर बिजलियां गिराने वाली एक्ट्रेस नम्रता मल्ला की लेटेस्ट तस्वीरें धमाल मचाए हुए हैं। उनकी तस्वीरें सोशल मीडिया पर आते ही

वायरल हो जाती है। बोल्ड और सेक्सी अंदाज के लिए जानी जाने वाली नम्रता मल्ला की फोटोज देखकर फैंस बेकाबू हो रहे हैं। नम्रता मल्ला अपनी बोल्ड अदाओं से फैंस को घायल कर दिया है। ग्लैमरस और सेक्सी तस्वीरों को देखकर सोशल मीडिया का पारा हाई है। नम्रता मल्ला ने स्पोर्ट्स ब्रा और व्हाइट शॉर्ट्स में काफी अट्रैक्टिव पोज दिए। एक्ट्रेस अपनी हॉटनेस और बोल्ड अंदाज से बड़ी बड़ी एक्ट्रेस को कड़ी टक्कर देती हैं। एक्ट्रेस नम्रता मल्ला ने हाल ही में रिलीज हुई फिल्म जग्गू की लालटेन में आइटम डांस किया है। एक्ट्रेस नम्रता मल्ला ने डीपनेक ब्रा में अपनी क्लीवेज फ्लॉन्ट की। साथ ही नम्रता मल्ला इस आउटफिट में अपना कर्वी फिगर फ्लॉन्ट कर रही हैं। एक्ट्रेस नम्रता मल्ला की इन तस्वीरों पर फैंस अपना प्यार बरसा रहे हैं। साथ ही तरह तरह के कमेंट्स कर रहे हैं। एक्ट्रेस अपनी फिटनेस के वीडियो यूट्यूब पर भी शेयर करती रहती हैं। नम्रता मल्ला के इंस्टाग्राम पर 1.5 मिलियन फॉलोवर्स हैं।

साई पल्लवी ने तमिल नृत्य आधारित वेब सीरीज 5678 का ट्रेलर किया जारी

अभिनेत्री साई पल्लवी, जो अपने नृत्य कौशल के लिए उतनी ही जानी जाती हैं, जितनी अभिनय के लिए, ने आगामी वेब श्रृंखला 5678 का एक आकर्षक और अपरंपरागत ट्रेलर जारी किया है, जो नृत्य पर आधारित है।

ट्रेलर जारी करते हुए, साई पल्लवी ने कहा, हर बार जब मैं फाइव सिक्स सेवन आठ की गिनती सुनती हूं, तो जुनून, डर और पागलपन का मिश्रण होता है जो मुझे अंधा कर देता है! यह ट्रेलर यादें वापस ले आया! सीरीज में सभी नर्तकियों के लिए मेरा प्यार। मेरे विजय सर, प्रसन्ना जेके, मृधुला और संगीत निर्देशक सैम सी.एस. को।

ए.एल. विजय, प्रसन्ना जेके और मृधुला श्रीधरन द्वारा निर्देशित यह वेब सीरीज इस साल 18 नवंबर से ओटीटी प्लेटफॉर्म जी5 पर स्ट्रीम होगी।

एएल अलगप्पन, हितेश ठाकुर द्वारा निर्मित, यह श्रृंखला प्रतिभाशाली किशोरों के एक समूह की कहानी कहती है।

ट्रेलर में बच्चों का एक झुंड दिखाया गया है, जो गरीब पृष्ठभूमि से आते हैं, लेकिन उन्हें डांस करना पसंद है। वे किसी भी पेशेवर प्रशिक्षण द्वारा समर्थित नहीं हैं। गेटेड कम्युनिटी से बच्चों को अपने कौशल को निखारते हुए देखना, युवा कलाकारों को अपने सपनों का पीछा करते देखना और बाधाओं के खिलाफ लडना उनके सपनों को पंख तब मिलते हैं, जब गेटेड कम्युनिटी का एक नया सदस्य केशव उनके साथ जुड़ जाता है। इसको लेकर निर्देशक विजय ने कहा, यह परियोजना मेरे दिल के बहुत करीब है और मेरे लिए खास है क्योंकि मैंने इस पर कुछ अद्भुत लोगों के साथ काम किया है। प्रसन्ना जेके और मृधुला श्रीधरन के साथ काम करना विचारों का एक बड़ा आदान–प्रदान था और 5678 एक संयुक्त उत्पाद है।

एक्शन फिल्म में काम करेंगे अहान शेट्टी

बॉलीवुड के माचो हीरो सुनील शेट्टी के बेटे अहान शेट्टी एक्शन फिल्म में काम करते नजर आयेंगे। अहान शेट्टी ने मिलन लुथारिया के निर्देशन में बनी फिल्म शतड़फ्य से अपने करियर की शुरूआत की

थी। इस फिल्म में उनके साथ तारा सुतारिया नजर आई थीं। अहान शेट्टी अपनी दूसरी फिल्म को लेकर तैयार हैं। उन्होंने दूसरी फिल्म को साइन कर लिया है और अगले साल 2023 की शुरूआत में फिल्म की शूटिंग करने के लिए पूरी तरह हैं। बताया जा रहा है कि यह एक एक्शन फिल्म है और इसे साउथ के फिल्ममेकर द्वारा निर्देशित किया जाएगा। इस फिल्म की शूटिंग पूरे भारत में की जाएगी और एक इंटरनेशनल शेड्यूल भी होगा। इस फिल्म में अहान शेट्टी का किरदार श्द ग्रे मैन्च्य के रयान गोसलिंग पर आधारित है। उनकी यह फिल्म साल 2023 के लास्ट में सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

रोज एप्पल खाने से मिलेंगे ये पांच प्रमुख फायदे

रोज एप्पल की खूशबू और स्वाद गुलाब के फूल की तरह होता है और इसे सफेद जामुन और वॉटर एप्पल जैसे कई नामों से जाना जाता है। आमतौर पर दक्षिण पूर्व एशियाई देशों और भारत के कुछ उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में रोज एप्पल की खेती की जाती है। यह फल एंटी–ऑक्सीडेंट गुण, उच्च पानी की मात्रा समेत कई जरूरी विटामिन्स से भरपूर होता है। आइए जानते हैं कि रोज एप्पल के सेवन से क्या–क्या स्वास्थ्य संबंधी लाभ मिल सकते हैं।

रोग प्रतिरोधक क्षमता को दे सकता है बढ़ावा

रोज एप्पल एंटी–माइक्रोबियल और एंटी–फंगल गुणों से भरपूर होता है, जो रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ावा देने में मदद कर सकता है। इसके अतिरिक्त, इस पौष्टिक फल में उच्च मात्रा में विटामिन– ए और विटामिन– सी मौजूद होता है, जो आपके शरीर को कई तरह के संक्रमण से बचाने में सहायक हो सकता है। इसमें मौजूद आयरन और कैल्शियम जैसे पोषक तत्व शरीर में सफेद रक्त कोशिकाओं के उत्पादन को बढ़ावा देने में कारगर हो सकते हैं।

वजन को संतुलित करने में है सहायक

अगर आप प्राकृतिक रूप से अपना वजन घटाना चाहते हैं तो अपनी डाइट में कम कैलोरी वाली खान–पान की चीजों समेत रोज एप्पल को शामिल करें। इस फल में मौजूद उच्च फाइबर लंबे समय पेट को भरा हुआ महसूस कराता है, जो अस्वास्थ्यकर लालसा को रोककर वजन घटाने को बढ़ावा देने में मदद कर सकता है। रोज एप्पल कैलोरी में भी कम होता है और इसमें वसा की मात्रा भी ना के बराबर होती है।

आंखों के स्वस्थ रखने में है कारगर

रोज एप्पल में विटामिन– ए मौजूद होता है, जो आंखों को स्वस्थ में अहम भूमिका अदा कर सकता है। यह विटामिन आंखों की रोशनी को बेहतर करने में मदद कर सकता है। इसके अलावा, यह आंखों की जलन और गठिया के इलाज में भी मदद कर सकता है। रोज एप्पल के एंटी–ऑक्सीडेंट गुण मुक्त कणों से लड़कर आंखों की कोशिकाओं को ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस के नुकसान और कई रोगों के जोखिम कम करने में मदद कर सकते हैं।

त्वचा के लिए है बढिया

रोज एप्पल में पाया जाने वाला विटामिन– सी त्वचा के स्वास्थ्य को स्वस्थ रखने में मदद कर सकता है। बता दें कि कई तरह के स्किन केयर प्रोडक्ट्स को बनाते समय रोज एप्पल के पत्ते के अर्क का उपयोग किया जाता है। इसका मुख्य कारण है कि यह एंटी–इंफ्लेमेटरी और एंटी–बैक्टीरियल गुणों से भरपूर होता है, जो त्वचा की सूजन, मुंहासें और एलर्जी जैसी समस्याओं का प्राकृतिक रूप से इलाज कर सकते हैं।

हड्डियों को मजबूती प्रदान करने में है मददगार

कैल्शियम से भरपूर रोज एप्पल हड्डियों को मजबूत और स्वस्थ बनाए रखने समेत हड्डियों से संबंधित विकारों जैसे ऑस्टियोआर्थराइटिस या ऑस्टियोपोरोसिस के जोखिम को कम करने में सहायक हो सकता है। 100 ग्राम रोज एप्पल में लगभग 29 मिलीग्राम कैल्शियम होता है। यह फल हड्डियों के घनत्व में भी सुधार कर सकता है। इसमें मैग्नीशियम और पोटेशियम भी मौजूद होता है, जो हड्डियों के स्वास्थ्य को बढ़ावा दे सकते हैं।